GEETA

Dr. Tulsi Ram Sharma M.A. Ph.D. (London, U.K.)

Geeta Stuti

"I will not fight. I must not," to "I will follow your word, I must", is a long journey. The journey is through eighteen chapters and seven hundred verses which are the following:

1. Arjuna Vishada Yoga (47), Despondency of Arjuna,
2. Sankhya Yoga (72), Philosophy of Sankhya Yoga,
3. Karma Yoga (43), Philosophy of Action,
4. Jnana-karma Sanyasa Yoga (42), Knowledge and Action Philosophy,
5. Karma Sanyasa Yoga (29), Renunciation of Action,
6. Dhyana Yoga (47), Self-control Yoga,
7. Jnana-Vijnana Yoga (30), Knowledge and Science,
8. Akshara-Brahma Yoga (28), Imperishable Brahman,
9. Raja-Vidya Yoga (34), Royal Lore and Secret,
10. Vibhuti Yoga (42), Lord Supreme Manifest,
11. Vishwarupa Darshana Yoga (55), Cosmic Body Manifest,
12. Bhakti Yoga (20), Meditation Yoga,
13. Kshetra-Kshetrajna Yoga (34), Field and Field Knower,
14. Guna-traya Yoga (27), Three-fold Gunas,
15. Purushottama Yoga (20), Spirit Supreme,
16. Daiva-asura sampada Yoga (24), Divine and Demoniac Quality of man,
17. Shraddha-traya Yoga (78), Threefold Faith,
18. Sharanagati Yoga (78), Surrender Divine.

During this dialogue of the Lord and his disciple, the most important step is this (2, 7): "My valour is gone. My very self and nature, my very identity, is overwhelmed by negation under the weight of doubt and compassion. My sense of right and wrong, Dharma and adharma, is lost. My mind is totally blurred. Pray say to me what is just, fair and sure, really good for me. I am your disciple. I come to you. Please show me the way." The Lord shows the way to the disciple through the interaction of Jivatma, Prakrti and Param Brahma through the 'I' that Krishna is.

Some people believe that Krishna is an incarnation (Avtara) of Param Brahma. Others hold that he is a Maha Manava, and that the 'I' of Geeta is just the 'I' of Arjuna, talking to himself in a situation of karmic crisis. But whether Krishna is an incarnation or not, we do pray for 'Bhaga' (Yajurveda, 34, 38); "Vayam bhagawantah syama." There is a verse in Vishnu Purana:

Aishwaryasya samagrasya dharmasya yashasah shriyah,
Jnana-vairagyayoshchaiva shnannam bhagah itirana.

All prosperity, Dharma, honour, wealth, Jnana and vairagya, these six are called Bhaga. One who has these is Bhagawan. So Krishna was Bhagawan, whether incarnation or not.

There is a verse of the Geeta which has become almost a proverb: "Karmanyevadhikaraste ma phaleshu kadachanah, you have a right to action, not to the phala thereof." The fruit of action is in the hands of Nature or in the hands of society. Here I remember something from Homer's *Iliad*. In

the *Iliad,* Archiles does not fight the way Arjuna refuses to fight for his own reasons. In the *Iliad*, Patroclus dies. Patrolus is a friend of Achiles: Achiles has to fight for revenge upon Hector, the killer of Patroclus. For this reason,Krishna tells Arjuna, that Arjuna's own Prakrti would force him to fight Drona and others. Krishna knew that Abhimanyu would have to die and Arjuna would have to fight, because 'prakrtim yanti bhutani'. Arjuna's own Prakrti would force him to fight. But here something else is in the mind: Bhishma, Drona, Karna and Jayadratha are already killed by the law of Ritam, by Krishna himself. "Worry not, fear not, fight", says Krishna, because they are already killed by the Law of Nature.

Krishna knew this because he knows everything. How does it go with Karmanyevadhikaraste? But it does go with Prakrtim yanti bhutani. If humans fail, Nature comes in. The Cosmic Law comes in because the working of Ritam and personal choice are the same. That is how Arjuna should fight.

There is a personal relationship between Arjuna and Lord Krishna. "You are dear to me", says Lord Krishna, more than once. "Leave all dharma aside. If you say you are a sinner, do not worry. I shall still save you. Worry not. You are dear to me." Arjuna too says: "My doubts are gone. I am my proper self. I am self-possessed, gone back to the state of freedom from Prakrti."

Ultimately Sanjaya says: "Where there is Yogeshwara Krishna and where there is the wielder of the bow, Arjuna, there is Victory, Grace, prosperity and victory with steadfast policy."

गीता स्तुति

गीता एक मिनीवेद है जो अर्जुन जैसे महावीर किंतु भटके हुए मानव के लिए भगवान् कृष्ण जैसे महामानव के मुखारविन्द से निःसृत हुआ है ।

मैं यह गीता स्तुति श्री विश्रुत आर्य जी के शुभ आग्रह पर लिख रहा हूँ । विश्रुत आर्य जी गीतासेवी और गीता भक्त हैं । विश्रुत आर्य जी जानते हैं कि मैं आर्य समाज से जुड़ा हुआ हूँ । आर्य समाज अवतारवाद को नहीं मानता पर अवतारी पुरुषों को मानता है । भगवान् राम और भगवान् कृष्ण ऐसे ही अवतारी महापुरुष थे,भगवान् भी थे पर ईश्वर नहीं, क्योंकि ईश्वर जन्म और मरण से परे है ।

भगवान् कौन है? जो भग-वान् हो । भग क्या है? विष्णु पुराण (६.५.७४) में लिखा है -
"ऐश्वर्यस्य समग्रस्य धर्मस्य यशसः श्रियः ।

ज्ञानवैराग्ययोश्चैव षण्णाम् भग इतीरणा ॥"

ये छह गुण जिसके पास हों वह भगवान् कहलाता है । भगवान् कृष्ण ऐसे भगवान् थे, वे स्वयं अपने आपको अजम्, अनादिम्, अव्ययम् कहते हैं । स्वयं वेद में मानवीय प्रार्थना है "वयम् भगवन्तः स्याम" (यजुर्वेद ३४:३८) अर्थात् हम भगवान् बनें ।

गीता का संदर्भ ५००० वर्ष पुराना है, महाभारत पहला जाना-माना विश्वयुद्ध था । तो भी वह संदर्भ आज भी उतना ही सजीव है जितना उस समय था । आज के युग में कर्तव्य की अपेक्षा अधिकार (राइट्स) पर अधिक जोर है । साथ ही धर्म की अपेक्षा प्रकृति(नेचर) पर अधिक जोर है । गीता इन समस्याओं का समाधान करती है ।

पहले हम अधिकार को लेते हैं । गीता कहती है -

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।" हे मनुष्य तू कर्म करने में स्वतंत्र है, फल प्राप्ति में नहीं । यूँ तो वर्कप्लानिंग में फल भी शामिल होता है पर क्या फल प्राप्ति के सभी अंगों पर हमारा पूर्ण कंट्रोल होता है? नहीं । मान लीजिए आप वर्कप्लानिंग की मीटिंग करने जा रहे हैं । आपकी गाड़ी ठीक है । पर क्या ट्रैफिक पर आपका कंट्रोल है?

रास्ते में आप ट्रैफिक जैम में फँस गए । मीटिंग कैन्सिल । इस तरह आप फल प्राप्ति के

सारे पहलू नहीं देख सकते । हाँ अपने साधन सारे जुटा सकते हैं ।

गीता फल प्राप्ति के पाँच साधन बताती है - कर्ता, कर्म, करण, अधिष्ठान और दैव । दैव परोक्ष भी होता है, अतः फलप्राप्ति जन्म-जन्मान्तर तक भी हो सकती है ।

अब रही प्रकृति की बात। अर्जुन तो प्रारम्भ से ही प्रकृति के चक्रव्यूह में फँस गया था। गया था युद्ध करने, फँस गया मोह में। सामने खड़े थे भीष्म पितामह, गुरु द्रोण, भाई, रिश्तेदार इत्यादि। सभी उसी के अपने ही तो थे। धनुष-बाण छोड़कर रथ की पिछाड़ी में बैठ गया। ये तो मर जायेंगे। पाप नहीं कर सकता। भीख माँगकर खानाअच्छा, मर जाना अच्छा, लड़ना अच्छा न हीं। पाप है। युद्ध के क्या परिणाम होंगे, एक-एक कर के सारे गिनवा दिए।

भगवान् कृष्ण ने सारे सुने। हँसते हुए से एक फटकार लगाई - कहाँ से और कैसेयह गंदगी तुम्हारे दिमाग में आई। मरता कोई नहीं, आत्मा अमर है, क्षत्रिय का धर्म है अन्याय के विरुद्ध लड़ना, धर्म की स्थापना करना। अन्याय के विरुद्ध न लड़ना पाप है। यदि तुम लड़ोगे नहीं तो तुम्हारी प्रकृति ही तुम्हें मजबूर कर देगी। तुम्हारी अपनी नहीं चलेगी।

यहाँ पर मुझे एक यूनानी महाकाव्य की याद आती है। इलियड एक ग्रीक महा- काव्य है और महाकवि होमरका। उसमें एक यूनानी वीर अकिलीस अपने कारणों से नहीं लड़ता। यूनानी वीर मारे जाते हैं, पर वह नहीं लड़ता। अंत में उसका ही परम मित्र पत्रोक्लस् मारा जाता है। उस का प्रतिशोध लेने के लिए उसी की प्रकृति उसे मजबूर कर देती है उसे लड़ने के लिए। मान लो महाभारत में भी अर्जुन नहीं लड़ता, तो युद्ध तो होता और अभिमन्यु को भी मरना तो था ही, तो अर्जुन की प्रकृति उसको प्रतिशोध लेने को मजबूर करती या नहीं? कृष्ण जानते थे क्या होना है। वे तो भगवान् थे।

मानव प्रकृति के दो रूप गीता में दिखाए गए हैं। एक प्रकृतिबद्ध जो ३:३३ में है,दूसरा प्रकृ तिमुक्त जो ११:५१ में है।

प्रकृतिबद्ध : प्रकृतिं यान्ति भूतानि निग्रहः किं करिष्यति। (३:३३)

प्रकृतिमुक्त : इदानीमस्मि संवृत्तः सचेताः प्रकृतिंगतः। (११:५१)

प्रकृतिबद्ध अवस्था में कोई निग्रह काम नहीं करता। प्रकृतिमुक्त अवस्था में स्थितप्रज्ञहोकर भग वान् के सृष्टि यज्ञ में निष्काम भाव से जब मनुष्य अपने कर्म की आहुति डालता है तब भगव ान स्वयं उसके योग क्षेम का वहन करते हैं।

अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः। (१८:६६)

अन्यथा यदि मनुष्य भगवान् की शरण नहीं लेता और उसके आदेश की उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा नह ीं करता तो सृष्टिचक्र में बार-बार चक्कर काटता रहेगा।

आज के नौजवान और अर्जुन में एक अंतर है। अर्जुन जानता था कि मैं भटक गया हूँ, ध र्म संमूढ़ चित्त हूँ, मुझे शिक्षा चाहिए। वह कृष्ण को गुरु मानता था। उसने कहा :-

शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम् (२:७)

भगवान ने कृपा प्रसाद दिया। शिष्य ने कहा करिष्ये वचनं तव।

परिणाम :- यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।

तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवानीतिर्मतिर्मम ॥

मैंने इस गीता स्तुति के प्रारम्भ में लिखा कि 'गीता मिनीवेद' है। हमारी दार्शनिक, धार्मिक और कार्मिक परंपरा वेद से आरम्भ होती है। यदि आप वेद नहीं पढ़ सकते तो गीता पढ़िये। वेद प्रकृति से पुरुष और परम पुरुष तक का ज्ञान है (गीता ७:४-५,

१५:१५)। यजुर्वेद अध्याय ४० (ईशोपनिषद्) अवश्य पढ़िये क्योंकि गीता मानो पहले दो मंत्रों का ही भाष्य है, अर्थात् ईशावास्यमिदं सर्वम् और कुर्वन्नेवेह कर्माणि का ही विस्तृत भाष्य है। गीता का ओ३म् तत् सत्, ईशोपनिषद (वेद) का ओ३म् खं ब्रह्म ऐसे ही महा-वाक्य हैं। अन्ततोगत्वा ओ३म् इत्येरदक्षरम् इदम् सर्वम् तस्योपाख्यानम् (माण्डूक्योपनिषद१:१), गीता का ब्रह्मोपदेश ये सब वेद का ही निर्देशन है। गीता मिनीवेद है। अवश्य पढ़िये और प्रसाद पाइये। ओ३म् शम्।

....महाभारत युद्ध के दसवें दिन संजय ने महाराज धृतराष्ट्र के पास आकर कहा महाराज आज भीष्म पितामह शिखण्डी के हाथों मारे गये। महाभारत का सूर्य अस्त हो गया।

---On the tenth day of Mahabharata Battle, Sanjaya came to Maharaj Dhritarashtra and said: Today Bhishma Pitamaha fell by Shikhandi. The Sun has set on Mahabharata.

...संजय कौन थे?

---Who was Sanjaya?

...संजय महाराज धृतराष्ट्र के सारथि थे, जिनको ब्रह्मऋषि व्यास का वरदान था कि वे महाभारत युद्ध की प्रत्येक गतिविधि के दर्शन कर सकेंगे।

---Sanjaya was the Charioteer of Maharaj Dhritarashtra, who had the shakti (boon) given to him by Maharshi Vyasa. Sanjaya could see everything in detail of what was going on in the Mahabharata battle.

...शिखण्डी कौन थे?

---Who was Shikhandi?

...शिखण्डी, महाराज द्रुपद के पुत्र थे, जिनका जन्म एक पुत्री के रूप में हुआ था। लेकिन किसी कारण से पुत्र में परिवर्तित हो गए थे और उन्होंने गुरु द्रोण से धनुर्विद्या भी सीख ली थी। लेकिन भीष्म पितामह, इनको पुत्री ही समझते थे और उनका प्रण था कि वह शिखण्डी के सामने शस्त्र नहीं उठाएंगे। इसी कारण दुर्योधन, भीष्म पितामह की रक्षा करने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे थे। इसी कारण जैसे ही शिखण्डी, भीष्म पितामह के सामने आया तो उन्होंने शस्त्र त्याग दिए और शिखण्डी के हाथों शरशय्या पर उनको लेटना पड़ा।

---Shikhandi was the son of Maharaja Drupad. He was born as a girl but somehow he changed into a boy. He learnt the Martial arts of battle from guru Drona. But Bhishma Pitamaha still considered him as girl. That’s why he had taken an oath of not picking up weapons whenever he would face Shikhandi. Due to this oath Duryodhana had taken every possible precaution to safeguard Bhishma Pitamaha. Because of the oath when Bhisma Pitamaha faced Shikhandi, Pitamaha put down his arms and got wounded badly and laid on his death bed.

...एक मान्यता यह भी है कि शिखण्डी के पीछे वास्तव में अर्जुन थे और अर्जुन के ही वाणों से पितामह की मृत्यु हुई थी। वास्तविकता यह है कि युद्ध के दसवें दिन पितामह का पतन हो गया। और वे शरशय्या पर लेट गये। यही समाचार धृतराष्ट्र महाराज को मिला और उन्होंने एक-एक दिन का वत्तांत संजय से पूछा।

---Another myth is that behind Shikhandi it was Arjuna who actually wounded Pitamaha badly. Pitamaha fell on the tenth day of the battle. Dhritarashtra got this news and asked Sanjaya to narrate the battle scene in detail to him.

...श्रीमद्भगवद् गीता, युद्ध से पहले भगवान कृष्ण और अर्जुन के वार्तालाप का योगदर्शन है, जिसका प्रारम्भ अर्जुन विषाद से होता है और अंत ''करिष्ये वचनं तव'' से होता है।

---Bhahwad Geeta is the conversation between Bhag¡wn Shri Krishna and Arjuna, before the battle started. It starts wirh questions from Arjuna and finishes with Arjuna saying, “I shall do your bidding.”

CHAPTER-1

धृतराष्ट्र उवाच ।
धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ।
मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सञ्जय ॥ १-१॥
Dhṛtarāṣṭra uvāca **/**
Dharmakṣetre kurukṣetre samavetā yuyutsavaḥ **/**
Māmakāḥ pāṇḍavāścaiva kimakurvata sañjaya **//** *1-1* **//**

धृतराष्ट्र ने कहाः

संजय, कहो, मेरे पुत्र और पाण्डवों ने धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र में धर्म विजय के लिए परस्पर सेनाओं से क्या किया।

Dhritrashtra Says:
Gathered in Kurukshetra on the field of action, ranged and ready to fight for the victory of Dharma in battle on Dharmakshetra, say Sanjaya, how did my sons and the children of Pandu fare on the field.

सञ्जय उवाच ।
दृष्ट्वा तु पाण्डवानीकं व्यूढं दुर्योधनस्तदा ।
आचार्यमुपसङ्गम्य राजा वचनमब्रवीत् ॥ १-२॥
Sañjaya uvāca
Dṛṣṭvā tu pāṇḍavānīkaṃ vyūḍhaṃ duryodhanastadā **/**
Ācāryamupasaṅgamya rājā vacanamabravīt **//** *1-2* **//**

संजय ने कहाः

पाण्डवों की व्यूह रचित सेना को देखकर, राजा दुर्योधन, आचार्यद्रोण के पास गए और उनको यह निवेदन किया:

-Says Sanjaya:
Having seen the forces of the Pandavas, ranged in battle order and ready, the king, Duryodhana, went close to Dronacharya, and spoke thus:

पश्यैतां पाण्डुपुत्राणामाचार्य महतीं चमूम् ।
व्यूढां द्रुपदपुत्रेण तव शिष्येण धीमता ॥ १-३॥
Paśyaitāṃ pāṇḍuputrāṇāmācārya mahatīṃ camūm **/**
Vyūḍhāṃ drupadaputreṇa tava śiṣyeṇa dhīmatā **//** *1-3* **//**

हे आचार्य, पाण्डवों की इस महती सेना को देखिए जिसकी व्यूह रचना आपके बुद्धिमान शिष्य द्रुपद पुत्र धृष्टद्युम्न ने की है।

Hey Acharya, see the grand army of the sons of Pandu, ranged in battle order by Drupada's son, your disciple, a mighty intelligent warrior.

अत्र शूरा महेष्वासा भीमार्जुनसमा युधि ।
युयुधानो विराटश्च द्रुपदश्च महारथः ॥ १-४॥
Atra śūrā maheṣvāsā bhīmārjunasamā yudhi **/**
Yuyudhāno virāṭaśca drupadaśca mahārathaḥ **//** *1-4* **//**

इस सेना में कितने ही महाधनुर्धारी वीर हैं, जैसे भीम और अर्जुन रणवीर हैं। युयुधान हैं, विराट हैं, महारथी द्रुपद हैं।

Here are great warriors, men of the mighty bow, who can fix the enemy at a single blow, all like Bhima and Arjuna in battle. There is Yuyudhana, Virata and Dhrupada, commander of the grand chariot.

धृष्टकेतुश्चेकितानः काशिराजश्च वीर्यवान् ।
पुरुजित्कुन्तिभोजश्च शैब्यश्च नरपुङ्गवः ॥ १-५॥
Dhṛṣṭaketuścekitānaḥ kāśirājaśca vīryavān **/**
Purujitkuntibhojaśca śaibyaśca narapuṅgavaḥ **//** *1-5* **//**

धृष्टकेतु हैं, चेकितान हैं, महाबलि काशिराज हैं, पुरूजित हैं, कुन्तिभोज हैं, और नरवीर शैव्य हैं।

There is Dhrishtaketu, Chekitana and the king of Kashi, the brave. There is Purujit, there is Kunti-bhoja and there is Shaivya, mighty among men of war.

युधामन्युश्च विक्रान्त उत्तमौजाश्च वीर्यवान् ।
सौभद्रो द्रौपदेयाश्च सर्व एव महारथाः ॥ १-६॥
Yudhāmanyuśca vikrānta uttamaujāśca vīryavān **/**
Saubhadro draupadeyāśca sarva eva mahārathāḥ **//** *1-6* **//**

युधामन्यु हैं, विक्रांत हैं, उत्तमौजा हैं, वीरों में वीर हैं। सुभद्रा पुत्र अभिमन्यु हैं, द्रौपदी पुत्र हैं। सभी वीरों के वीर हैं।

There is Yudhamanyu and there is Vikranta, there is Uttamauja, the brave. There is Abhimanyu, son of Subhadra, there are sons of Draupadi. They are all heroes of the chariot.

अस्माकं तु विशिष्टा ये तान्निबोध द्विजोत्तम ।
नायका मम सैन्यस्य संज्ञार्थं तान्ब्रवीमि ते ॥ १-७॥

Asmākaṃ tu viśiṣṭā ye tānnibodha dvijottama **/**
Nāyakā mama sainyasya saṃjñārthaṃ tānbravīmi te **//** *1-7* **//**

हमारी सेना में जो वीर विशेष है, उनके सम्बन्ध में, हे द्विजोतम, सुनिये: वे मेरी सेना के नायक हैं, केवल परिचयार्थ बता रहा हूं।

Know now all the chiefs of our forces, O first of the Brahmanas. They are leaders of our army. I speak of them for your information.

भवान्भीष्मश्च कर्णश्च कृपश्च समितिञ्जयः ।
अश्वत्थामा विकर्णश्च सौमदत्तिस्तथैव च ॥ १-८॥
Bhavānbhīṣmaśca karṇaśca kṛpaśca samitiñjayaḥ **/**
Aśvatthāmā vikarṇaśca saumadattistathaiva ca **//** *1-8* **//**

आप हैं, पितामह भीष्म हैं, कर्ण हैं, कृप हैं जो सदा जीत कर ही आते हैं, अश्वत्थामा हैं, विकर्ण हैं, सोमदत्ति हैं।

First of all you yourself, then Bhishma, and Karna, and Kripa, winner of wars. There is Ashwatthama and Vikarna, and there is the son of Somadatta in the line of heroes.

अन्ये च बहवः शूरा मदर्थे त्यक्तजीविताः ।
नानाशस्त्रप्रहरणाः सर्वे युद्धविशारदाः ॥ १-९॥
Anye ca bahavaḥ śūrā madarthe tyaktajīvitāḥ **/**
Nānāśastrapraharaṇāḥ sarve yuddhaviśāradāḥ **//** *1-9* **//**

और कितने ही वीर हैं, जिन्होंने अपने जीवन को दाव पर लगा दिया है, मेरे लिए। सभी शस्त्रवीर हैं, युद्ध कला में निपुण हैं।

And there are a lot many more, to fight for me till the last drop of their blood. Experts they are in the use of weapons of offense and defense, they are all heroes of War and Victory.

अपर्याप्तं तदस्माकं बलं भीष्माभिरक्षितम् ।
पर्याप्तं त्विदमेतेषां बलं भीमाभिरक्षितम् ॥ १-१०॥
Aparyāptaṃ tadasmākaṃ balaṃ bhīṣmābhirakṣitam **/**
Paryāptaṃ tvidameteṣāṃ balaṃ bhīmābhirakṣitam **//** *1-10* **//**

हमारी सेना जिसके नायक और रक्षक पितामह भीष्म हैं, वह तो असीम है। और पांडवों की सेना जिसके नायक और रक्षक भीम हैं, वह तो सीमित है, केवल सात अक्षौहिणी ही तो हैं।

Unbounded is our army, directed and defended by Bhishma. But this army of theirs, directed and defended by Bhima, that is limited.

अयनेषु च सर्वेषु यथाभागमवस्थिताः ।
भीष्ममेवाभिरक्षन्तु भवन्तः सर्व एव हि ॥ १-११॥
Ayaneṣu ca sarveṣu yathābhāgamavasthitāḥ **/**
Bhīṣmamevābhirakṣantu bhavantaḥ sarva eva hi **//** *1-11* **//**

सभी सेना भागों में सभी सेनानायक अपने-अपने स्थानों पर स्थित भीष्म पितामह की रक्षा का ध्यान रखें। (शिखण्डी के सामने पितामह न आने पाऐं)।

All you warriors, stand fast and firm in position according to your ranks and fight on all in defence of Bhishma and for Bhishma (Pitamaha should not come face to face with Shikhandi).

तस्य सञ्जनयन्हर्षं कुरुवृद्धः पितामहः ।
सिंहनादं विनद्योच्चैः शङ्खं दध्मौ प्रतापवान् ॥ १-१२॥
Tasya sañjanayanharṣaṃ kuruvṛddhaḥ pitāmahaḥ **/**
Siṃhanādaṃ vinadyoccaiḥ śaṅkhaṃ dadhmau pratāpavān **//** *1-12* **//**

तब महाप्रतापी क्रुरूखृद्ध भीष्म पितामह ने ऊंचे स्वर में शंख बजाकर सिंहनाद किया। सिंहनाद सुनकर दुर्योधन के मन को अतीव हर्ष हुआ।

Then the Scion of the Kurus, the grand-sire Bhishma, blew aloud his conch like a roar of the lion which sent around a wave of joy and elation through his forces, Duryodhana specially.

ततः शङ्खाश्च भेर्यश्च पणवानकगोमुखाः ।
सहसैवाभ्यहन्यन्त स शब्दस्तुमुलोऽभवत् ॥ १-१३॥
Tataḥ śaṅkhāśca bheryaśca paṇavānakagomukhāḥ **/**
Sahasaivābhyahanyanta sa śabdastumulo'bhavat **//** *1-13* **//**

तब तो उनके शंख, भेरी, पणवानक, ढोल और गोमुख एकदम बजने लगे। उनका शब्द मानो आकाश को चीरने लगा।

Then shankhas, bheris, panawanakas, gomukhas, all at once were blown aloud and the space around resounded with the call for war.

ततः श्वेतैर्हयैर्युक्ते महति स्यन्दने स्थितौ ।
माधवः पाण्डवश्चैव दिव्यौ शङ्खौ प्रदध्मतुः ॥ १-१४॥

Tataḥ śvetairhayairyukte mahati syandane sthitau **/**
Mādhavaḥ pāṇḍavaścaiva divyau śaṅkhau pradadhmatuḥ **//** *1-14* **//**

सफेद घोड़ों से सुसज्जित महान रथ पर विराजमान केशव और अर्जुन ने भी अपने दिव्य शंख एस बजाए, जस यद्ध का कहर आगया।

Then seated together in the grand chariot drawn by white horses, Krishna and Arjuna both blew their celestial conches as if all hell of war was let loose.

पाञ्चजन्यं हृषीकेशो देवदत्तं धनञ्जयः ।
पौण्ड्रं दध्मौ महाशङ्खं भीमकर्मा वृकोदरः ॥ १-१५॥
Pāñcajanyaṃ hṛṣīkeśo devadattaṃ dhanañjayaḥ **/**
Pauṇḍraṃ dadhmau mahāśaṅkhaṃ bhīmakarmā vṛkodaraḥ **//** *1-15* **//**

हृषोकेश कृष्ण ने पांचन्य और धनन्जय अर्जुन ने देवदत्त शंखनाद किया। चौड़ी छाती वाले भयंकर भीम ने भी अपना पौण्ड्र नाम का शंख बजाया।

Divine Krishna blew the Panchajanya, and Arjuna blew the Devadatta. Bhima, warrior of mighty loin and terrible action, blew Paundra, the grand conch of mighty fame.

अनन्तविजयं राजा कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः ।
नकुलः सहदेवश्च सुघोषमणिपुष्पकौ ॥ १-१६॥
Anantavijayaṃ rājā kuntīputro yudhiṣṭhiraḥ **/**
Nakulaḥ sahadevaśca sughoṣamaṇipuṣpakau **//** *1-16* **//**

कुंतीपुत्र राजा युधिष्ठिर ने अनन्त विजय नाम का शंख बजाया। नकुल ने सुघोष और सहदेव ने मणिपुष्पक नाम का शंख बजाया।

The Raja, Yudhishthira, son of Kunti, blew the Ananta-vijaya, conch of boundless victory. Nakula blew the Sughosha, conch of terrible sound, and Sahadeva blew Manipushpaka, the conch of jewel and flower.

काश्यश्च परमेष्वासः शिखण्डी च महारथः ।
धृष्टद्युम्नो विराटश्च सात्यकिश्चापराजितः ॥ १-१७॥
Kāśyaśca parameṣvāsaḥ śikhaṇḍī ca mahārathaḥ **/**
Dhṛṣṭadyumno virāṭaśca sātyakiścāparājitaḥ **//** *1-17* **//**

परम बाणधारी काशीराज, महारथी शिखण्डी, धृष्टद्युम्न, विराट, वीर सात्यकि, जो कभी पराजय का मुख नहीं देखते थे।

Then Kashya, ace shooter of the arrow, and Shikhandi, commander of the grand chariot, Dhrishtadyumna, Virata and the unconquerable Satyaki....

द्रुपदो द्रौपदेयाश्च सर्वशः पृथिवीपते ।
सौभद्रश्च महाबाहुः शङ्खान्दध्मुः पृथक्पृथक् ॥ १-१८॥
Drupado draupadeyāśca sarvaśaḥ pṛthivīpate **/**
Saubhadraśca mahābāhuḥ śaṅkhān dadhmuḥ pṛthakpṛthak **//***1-18* **//**

महाराज द्रुपद, 'द्रौपदी पुत्र', सुभद्रा तनय अभिमन्यु, सबने अलग-अलग शंखनाद किया।

Drupada, and the sons of Draupati, O ruler of the earth, the son of Subhadra, O warrior of great arms, all one by one blew their conches.

स घोषो धार्तराष्ट्राणां हृदयानि व्यदारयत् ।
नभश्च पृथिवीं चैव तुमुलोऽभ्यनुनादयन् ॥ १-१९॥
Sa ghoṣo dhārtarāṣṭrāṇāṃ hṛdayāni vyadārayat **/**
Nabhaśca pṛthivīṃ caiva tumulo'bhyanunādayan **//** *1-19* **//**

वह शंखनाद ऐसा भयंकर था कि उसे सुनकर धृतराष्ट्र पुत्रों के तो हृदय फट गये। मानो धरती और आकाश उस भयंकर शब्द से गूंजने लगे।

That mighty roar tore through the hearts of the sons of Dhritarashtra as it resounded high over the earth and the skies.

अथ व्यवस्थितान्दृष्ट्वा धार्तराष्ट्रान् कपिध्वजः ।
प्रवृत्ते शस्त्रसम्पाते धनुरुद्यम्य पाण्डवः ॥ १-२०॥
Atha vyavasthitāndṛṣṭvā dhārtarāṣṭrān kapidhvajaḥ **/**
Pravṛtte śastrasampāte dhanurudyamya pāṇḍavaḥ **//** *1-20* **//**

और तब अर्जुन जिनके ध्वज पर सदा हनुमान जी का वास रहता था। उन्होंने देखा कि सामने धृतराष्ट्र पुत्र युद्ध के लिए खड़े हैं। अर्जुन ने धनुष उठाया है और यह योगेश्वर से कहा...

And then Kapidhwaja, Arjuna, hero of the flag of Hanuman, saw the forces of the children of Dhritarashtra in the midst of that readiness of battle, he raised his bow...

हृषीकेशं तदा वाक्यमिदमाह महीपते ।
Hṛṣīkeśaṃ tadā vākyamidamāha mahīpate **/**

राजन, तब अर्जुन ने हृषोकेश से कहा: हे पृथवि के राजा:
And spoke to Hrishikesha, and so said he, O ruler of the earth:

अर्जुन उवाच ।
सेनयोरुभयोर्मध्ये रथं स्थापय मेऽच्युत ॥ १-२१॥
Arjuna uvāca **।**
Senayorubhayormadhye rathaṃ sthāpaya me'cyuta **॥** *1-21* **॥**

अर्जुन ने कहा:
हे कृष्ण! मेरे रथ को दोनां सेनाओं के बीच में ले चलो-हे राजन्, ऐसा भगवान कृष्ण को अर्जुन ने कहा। (भगवान् तो सदा जागृत रहते हैं)
Says Arjuna:
Krishna, immaculate and imperishable, let the chariot move to the middle of the battle ranks, for me,

यावदेतान्निरीक्षेऽहं योद्धुकामानवस्थितान् ।
कैर्मया सह योद्धव्यमस्मिन् रणसमुद्यमे ॥ १-२२॥
Yāvadetānnirīkṣe'haṃ yoddhukāmānavasthitān **।**
Kairmayā saha yoddhavyamasmin raṇasamudyame **॥** *1-22* **॥**

मैं यह देखना चाहता हं कि युद्ध करने वाले जो मेरे सामने खड़े हैं, ये कौन हैं, मुझे किन से युद्ध करना है, इस घोर युद्ध में मुझे किन-किन से लड़ना है।
So that I may survey these forces ranged in order and keen for battle and I may know who I have to fight in this heat of battle.

योत्स्यमानानवेक्षेऽहं य एतेऽत्र समागताः ।
धार्तराष्ट्रस्य दुर्बुद्धेर्युद्धे प्रियचिकीर्षवः ॥ १-२३॥
Yotsyamānānavekṣe'haṃ ya ete'tra samāgatāḥ **।**
Dhārtarāṣṭrasya durbuddheryuddhe priyacikīrṣavaḥ **॥** *1-23* **॥**

मुझे यह देखना है कि यह जो सामने खड़े हैं और धृतराष्ट्र के दुर्बुद्धि पुत्र के लिए जो युद्ध करने आये हैं वे कौन हैं और कैसे उस मूर्ख की सेवा करना चाहते हैं।
I want to see all those who have come here in the interest of the foolish son of Dhritarashtra.

सञ्जय उवाच ।
एवमुक्तो हृषीकेशो गुडाकेशेन भारत ।

सेनयोरुभयोर्मध्ये स्थापयित्वा रथोत्तमम् ॥ १-२४॥
Sañjaya uvāca **/**
Evamukto hṛṣīkeśo guḍākeśena bhārata **/**
Senayorubhayormadhye sthāpayitvā rathottamam **//** *1-24* **//**

संजय ने कहा:
संजय कहते हैं कि गुडाकेश अर्जुन के ऐसा करने पर भगवान कृष्ण, उस सुंदर रथ को दोनों सेनाओं के बीच में ले गये।
Sanjaya Says:
O Bharata, having been so requested by Arjuna, conqueror of sloth and sleep, Krishna, Hrishikesha, moved the chariot to the middle of the two forces:

भीष्मद्रोणप्रमुखतः सर्वेषां च महीक्षिताम् ।
उवाच पार्थ पश्यैतान्समवेतान्कुरूनिति ॥ १-२५॥
Bhīṣmadroṇapramukhataḥ sarveṣāṃ ca mahīkṣitām **/**
Uvāca pārtha paśyaitān-samavetān-kurūniti **//** *1-25* **//**

और रथ को भीष्म, द्रोण और सब राजाओं के सामने खड़ा करके बोले कि अर्जुन अब सब कौरवों को देख लो। (जैसा तुम देखना चाहते थे)
Facing Bhishma and Drona and all the rulers of the earth, he said, “Partha, now see these Kurus ranged against you for the conquest of the earth’s kingdom.”

तत्रापश्यत्स्थितान्पार्थः पितृनथ पितामहान् ।
आचार्यान्मातुलान्भ्रातृन्पुत्रान्पौत्रान्सखींस्तथा ॥ १-२६॥
Tatrāpaśyat-sthitān-pārthaḥ pitṝnatha pitāmahān **/**
Ācāryān-mātulān-bhrātṝn-putrānpautrān-sakhīṃstathā **//** *1-26* **//**

पार्थ ने देखा कि यहां तो उनके सामने पितृगण, पितामह, आचार्य, मामा, भाई, पुत्र, पौत्र व मित्रगण खड़ हैं।
There saw Partha, standing up-front, warriors of the order of fathers, grandfathers, teachers, uncles of the mother's side, brothers, sons, grandsons and friends

श्वशुरान्सुहृदश्चैव सेनयोरुभयोरपि ।
तान्समीक्ष्य स कौन्तेयः सर्वान्बन्धूनवस्थितान् ॥ १-२७॥
कृपया परयाविष्टो विषीदन्निदमब्रवीत् ।
Śvaśurānsuhṛdaścaiva senayorubhayorapi **/**
Tānsamīkṣya sa kaunteyaḥ sarvānbandhūnavasthitān **//** *1-27* **//**

Kṛpayā parayāviṣṭo viṣīdannidamabravīt **/**

ससुर, सुहृद मित्र, सबके सब दोनों सेनाओं के मध्य खड़े हैं। इन सबको देखकर वह सभी भाई बंधुओं के लिए उसका हृदय, दया से पिघल गया और वह भगवान कृष्ण से बोले:

And fathers-in-law, sincere noble hearts all in both the armies. Having seen all these carefully, all his own people standing there on the field, he, Kaunteya, Arjuna, overwhelmed with love, pity and despair, said to Krishna:

अर्जुन उवाच ।
दृष्ट्वेमं स्वजनं कृष्ण युयुत्सुं समुपस्थितम् ॥ १-२८॥
Arjuna uvāca **/**
Dṛṣṭvemaṃ svajanaṃ kṛṣṇa yuyutsuṃ samupasthitam **//** *1-28* **//**

अर्जुन ने कहा:
हे कृष्ण अपने ही सभी युद्धार्थी वीरों को देखकर जो सामने ही खड़े हैं....
Says Arjuna:
Krishna, when I see my own people standing here, bent on the battle....

सीदन्ति मम गात्राणि मुखं च परिशुष्यति ।
वेपथुश्च शरीरे मे रोमहर्षश्च जायते ॥ १-२९॥
Sīdanti mama gātrāṇi mukhaṃ ca pariśuṣyati **/**
Vepathuśca śarīre me romaharṣaśca jāyate **//** *1-29* **//**

कृष्ण, मेरा तो अंग प्रत्यंग बैठा जा रहा है। मेरा गला सूख रहा है। मेरे शरीर के रोम-रोम रोमांचित है। (मैं इसे देख नहीं सकता)

Krishna, my limbs sink in despair, my mouth dries up, my whole body shakes to the core and my hair is smothered in fear of the unknown.

गाण्डीवं स्रंसते हस्तात्त्वक्चैव परिदह्यते ।
न च शक्नोम्यवस्थातुं भ्रमतीव च मे मनः ॥ १-३०॥
Gāṇḍīvaṃ sraṃsate hastāt-tvakcaiva paridahyate **/**
Na ca śaknomyavasthātuṃ bhramatīva ca me manaḥ **//** *1-30* **//**

में अपने धनुष को संभाल नहीं सकता। मेरा शरीर जल रहा है। मैं स्वयं लड़खड़ा रहा हं। मेरा सिर चकरा रहा है। मेरा मन उद्विग्न है।

My bow of terror falls from my hand and my skin burns all over. I am unable to stand and my mind is in a whirlpool of fear and uncertainty.

निमित्तानि च पश्यामि विपरीतानि केशव ।
न च श्रेयोऽनुपश्यामि हत्वा स्वजनमाहवे ॥ १-३१॥
Nimittāni ca paśyāmi viparītāni keśava **/**
Na ca śreyo'nupaśyāmi hatvā svajanamāhave **//** *1-31* **//**

मुझ अपशगुन दीख रहे हैं, केशव मुझे इस युद्ध में अपनों को ही मार कर कोई कल्याण नहीं दीखता।
I see no good; in fact, Keshava, I see all chances and omens contrary to me. Nor do I see anything good coming to me by killing my own people in battle.

न काङ्क्षे विजयं कृष्ण न च राज्यं सुखानि च ।
किं नो राज्येन गोविन्द किं भोगैर्जीवितेन वा ॥ १-३२॥
Na kāṅkṣe vijayaṃ kṛṣṇa na ca rājyaṃ sukhāni ca **/**
Kiṃ no rājyena govinda kiṃ bhogairjīvitena vā **//** *1-32* **//**

हे कृष्ण, मुझे विजय नहीं चाहिए। मुझ राज सुख भी नहीं चाहिए। हमें राज्य से क्या लेना। गोविंद, हमें भोग से क्या लेना, वास्तव में जीवन से भी क्या लेना।
I have no desire, Krishna, for victory, nor do I want any empire, nor a trail of ease and comfort. Govinda, what good is empire for us or pleasure or even life itself?

येषामर्थे काङ्क्षितं नो राज्यं भोगाः सुखानि च ।
त इमेऽवस्थिता युद्धे प्राणांस्त्यक्त्वा धनानि च ॥ १-३३॥
Yeṣāmarthe kāṅkṣitaṃ no rājyaṃ bhogāḥ sukhāni ca **/**
Ta ime'vasthitā yuddhe prāṇāṃstyaktvā dhanāni ca **//** *1-33* **//**

जिनके लिए राज्य भोग और सुख चाहिए, वे तो सामने खड़े हैं, प्राण, धन सब कुछ छोड़कर, युद्ध के लिए मरने को तैयार हैं।
Those for whose sake we want an empire, or pleasure, power and comfort, they stand here for battle with all their life and wealth at stake in battle.

आचार्याः पितरः पुत्रास्तथैव च पितामहाः ।
मातुलाः श्वशुराः पौत्राः श्यालाः सम्बन्धिनस्तथा ॥ १-३४॥
Ācāryāḥ pitaraḥ putrāstathaiva ca pitāmahāḥ **/**
Mātulāḥ śvaśurāḥ pautrāḥ śyālāḥ sambandhinastathā **//** *1-34* **//**

वे आचार्य हैं, पितृगण हैं। पुत्र हैं, पितामह हैं, मामा हैं, श्वसुर हैं, पौत्र हैं, श्याला हैं, सभी संबंधी हैं।
They are teachers, fathers, sons and grand-fathers. They are maternal uncles, fathers in law, grandsons, brothers-in-law, all near and dear ones.

एतान्न हन्तुमिच्छामि घ्नतोऽपि मधुसूदन ।
अपि त्रैलोक्यराज्यस्य हेतोः किं नु महीकृते ॥ १-३५॥
Etānna hantumicchāmi ghnato'pi madhusūdana **/**
Api trailokyarājyasya hetoḥ kiṃ nu mahīkṛte ***// 1-35 //***

मैं इनको नहीं मार सकता, स्वयं मर जाऊंगा, मधुसूदन। मैं त्रिलोक के राज के लिए भी इनको नहीं मारूंगा, पृथवी की तो बात ही क्या है।
These I don't want to kill, even though I get killed in the battle. Madhusudana, O promoter of the sweets of life, I refuse to kill them even for empire of the three worlds, and shall I do that even for a part of the earth? No.

निहत्य धार्तराष्ट्रान्नः का प्रीतिः स्याज्जनार्दन ।
पापमेवाश्रयेदस्मान्हत्वैतानाततायिनः ॥ १-३६॥
Nihatya dhārtarāṣṭrānnaḥ kā prītiḥ syājjanārdana **/**
Pāpamevāśrayedasmānhatvaitānātatāyinaḥ ***// 1-36 //***

हे जनार्दन, धृतराष्ट्र के पुत्रों को मारकर हमारा क्या कल्याण होगा। माना कि वे आततायी हैं, लेकिन हम को तो पाप ही लगेगा।
O Janardana, by killing these children of Dhritarashtra, what good is going to follow for us? What are we going to gain for ourselves except sin and pollution of the soul, evil though they are, guilty of arson and murder, robbers, grabbers, gamblers, ravishers and what not?

तस्मान्नार्हा वयं हन्तुं धार्तराष्ट्रान्स्वबान्धवान् ।
स्वजनं हि कथं हत्वा सुखिनः स्याम माधव ॥ १-३७॥
Tasmānnārhā vayaṃ hantuṃ dhārtarāṣṭrānsvabāndhavān **/**
Svajanaṃ hi kathaṃ hatvā sukhinaḥ syāma mādhava ***// 1-37 //***

अतः हम तो उनको नहीं मारेंगे। धृतराष्ट्र के पुत्र हमारे भाई ही तो हैं। हे माधव, अपनों को ही मार कर हम कैसे सुखी रह सकते हैं।
Still they do not deserve to be killed, nor is it fair for us to kill them. Though they are children of Dhritarashtra, they are ours, not aliens. O Madhava, having killed our

own, how can we be happy or at peace?

यद्यप्येते न पश्यन्ति लोभोपहतचेतसः ।
कुलक्षयकृतं दोषं मित्रद्रोहे च पातकम् ॥ १-३८॥
Yadyapyete na paśyanti lobhopahatacetasaḥ **/**
Kulakṣayakṛtaṃ doṣaṃ mitradrohe ca pātakam **//** *1-38* **//**

माना कि धृतराष्ट्र पुत्र लोभ के कारण नहीं देख पा रहे हैं। लेकिन हमें तो युद्ध करने से कुलक्षय का पाप लगेगा। उनमें कई हमारे मित्र भी हैं, तो हमें मित्र द्रोह का पाप भी लगेगा।

True, vitiated by greed, they do not realize the sin of family destruction and the crime of treachery to friends.

कथं न ज्ञेयमस्माभिः पापादस्मान्निवर्तितुम् ।
कुलक्षयकृतं दोषं प्रपश्यद्भिर्जनार्दन ॥ १-३९॥
Kathaṃ na jñeyamasmābhiḥ pāpādasmānnivartitum **/**
Kulakṣayakṛtaṃ doṣaṃ prapaśyadbhirjanārdana **//** *1-39* **//**

कुलक्षय का पाप तो हमें सामने पड़ा दीख रहा है। ह जनार्दन, हमें इस पाप से कैसे बचना है, यह तो दीखना चाहिए।

But we have the eyes to see the sin of family pollution, the crime of treachery to friends. Why should we then not know how to deliver ourselves from the sin of family destruction, Janardana?

कुलक्षये प्रणश्यन्ति कुलधर्माः सनातनाः ।
धर्मे नष्टे कुलं कृत्स्नमधर्मोऽभिभवत्युत ॥ १-४०॥
Kulakṣaye praṇaśyanti kuladharmāḥ sanātanāḥ **/**
Dharme naṣṭe kulaṃ kṛtsnamadharmo'bhibhavatyuta **//** *1-40* **//**

जब कुलक्षय होता है तो सनातन कुलधर्म भी नष्ट हो जाते हैं। जब कुलधर्म नष्ट होते हैं तो सब तरह का अधर्म भी बढ़ता है।

When the family gets destroyed then the permanent values and tenets of the family are destroyed. And when the family values are lost, then the values contrary to Dharmic values overtake the family.

अधर्माभिभवात्कृष्ण प्रदुष्यन्ति कुलस्त्रियः ।
स्त्रीषु दुष्टासु वार्ष्णेय जायते वर्णसङ्करः ॥ १-४१॥

Adharmābhibhavātkṛṣṇa praduṣyanti kulastriyaḥ **/**
Strīṣu duṣṭāsu vārṣṇeya jāyate varṇasaṅkaraḥ **//** *1-41* **//**

हे कृष्ण, अधर्म के बढ़ने से कुल की स्त्रियों में दोष बढ़ता है, और स्त्रियों में दोष बढने से वर्णसंकर का जन्म होता है।

O Krishan, when adharmic values overtake the family, the women first fall a prey to those sinful values. When the women fall, then mixed values and characters are born and prosper.

सङ्करो नरकायैव कुलघ्नानां कुलस्य च ।
पतन्ति पितरो ह्येषां लुप्तपिण्डोदकक्रियाः ॥ १-४२॥
Saṅkaro narakāyaiva kulaghnānāṃ kulasya ca **/**
Patanti pitaro hyeṣāṃ luptapiṇḍodakakriyāḥ **//** *1-42* **//**

वर्णसंकर तो कुल और कुलघातियों के लिए नर्क का कारण बनता है, क्योंकि उनके पितृगण भी श्राद्ध और तर्पण से वंचित होकर मिट जाते हैं।

Mixed values are the doorway to the fall of the family and family Dharma. Traditions of the ancients themselves are neglected for want of proper followers.

दोषैरेतैः कुलघ्नानां वर्णसङ्करकारकैः ।
उत्साद्यन्ते जातिधर्माः कुलधर्माश्च शाश्वताः ॥ १-४३॥
Doṣairetaiḥ kulaghnānāṃ varṇasaṅkarakārakaiḥ **/**
Utsādyante jātidharmāḥ kuladharmāśca śāśvatāḥ **//** *1-43* **//**

वर्णसंकर और कुल घातियों के कारण जो दोष होते हैं, उनके कारण जो जातिधर्म और कुलधर्म होते हैं वे सब नष्ट हो जाते हैं।

Following the violation of tradition by the violators of Dharma, and fast upon the growth of mixed values, the Dharma of the human society is violated and the fall of eternal values follows fast

उत्सन्नकुलधर्माणां मनुष्याणां जनार्दन ।
नरके नियतं वासो भवतीत्यनुशुश्रुम ॥ १-४४॥
Utsannakuladharmāṇāṃ manuṣyāṇāṃ janārdana **/**
Narake niyataṃ vāso bhavatītyanuśuśruma **//** *1-44* **//**

जनार्दन सुना है, कि जिन मनुष्यों के कुलधर्म नष्ट हो जाते हैं उनका नरक में अनियत वास होता है।

When the eternal human values are uprooted, then, as we hear, human society is sure to suffer with the sure onslaught of misery and unhappiness.

अहो बत महत्पापं कर्तुं व्यवसिता वयम् ।
यद्राज्यसुखलोभेन हन्तुं स्वजनमुद्यताः ॥ १-४५॥
Aho bata mahatpāpaṃ kartuṃ vyavasitā vayam **/**
Yadrājyasukhalobhena hantuṃ svajanamudyatāḥ **//** *1-45* **//**

दुःख है कि हम एक घोर पाप करने पर तुले हैं, क्योंकि हम अपने ही परिवार का संहार करने पर उद्यत हैं और सो भी राज्य सुख भोगने के लिए।

Woe it is that through our battle, we are bent upon committing a grave sin, since for the sake of some temporary ease and comfort, we are prepared to kill our own people. What a fall, Krishna!

यदि मामप्रतीकारमशस्त्रं शस्त्रपाणयः ।
धार्तराष्ट्रा रणे हन्युस्तन्मे क्षेमतरं भवेत् ॥ १-४६॥
Yadi māmapratīkāramaśastraṃ śastrapāṇayaḥ **/**
Dhārtarāṣṭrā raṇe hanyustanme kṣemataraṃ bhavet **//** *1-46* **//**

यदि मुझे बिना शस्त्र और बिना शस्त्र प्रतीकार के शस्त्रधारी धृतराष्ट्र पुत्र मार डालें तो ही संभवत हमारा कल्याण हो।

If me, unarmed and unresponsive to the onslaught of the forces of the sons of Dhritarashtra, all armed and fighting, were to kill me, that would be the best option for me.

सञ्जय उवाच ।
एवमुक्त्वार्जुनः सङ्ख्ये रथोपस्थ उपाविशत् ।
विसृज्य सशरं चापं शोकसंविग्नमानसः ॥ १-४७॥
Sañjaya uvāca **/**
Evamuktvārjunaḥ saṅkhye rathopastha upāviśat **/**
Visṛjya saśaraṃ cāpaṃ śokasaṃvignamānasaḥ **//** *1-47* **//**

संजय बोले:

राजन् ऐसा कह कर अर्जुन ने धनुष बाण रख दिए और वह दुःखी होकर रथ की पिछाड़ी में बैठ गया। उसने ऐसा दोनों सेनाओं के बीच में किया (जहां भगवान कृष्ण अर्जुन के रथ को ले गए थे।)।

Sanjaya says:

Having said so, Arjuna put down his bow along with the arrows and, his mind and heart stricken with sorrow and despair, he sat down at the back of the chariot in the midst of the two armies on the battle field.

CHAPTER-2

सञ्जय उवाच ।
तं तथा कृपयाविष्टमश्रुपूर्णाकुलेक्षणम् ।
विषीदन्तमिदं वाक्यमुवाच मधुसूदनः ॥ २-१॥
Sañjaya uvāca **/**
Taṃ tathā kṛpayāviṣṭamaśrupūrṇākulekṣaṇam **/**
Viṣīdantamidaṃ vākyamuvāca madhusūdanaḥ **//** *2-1* **//**

संजय, महाराज धृतराष्ट्र से बोले:

अर्जुन, हृदय कृपा द्रवित, आखें अश्रु पुर्ण, साहस टूटा हुआ, भगवान कृष्ण ने कहा:

Says Sanjaya to Dhritarashtra:
To him, then, overwhelmed with pity, his eyes filled with tears, sinking in despair, Krishna Madhusudana, destroyer of demonic forces, spoke thus:

श्रीभगवानुवाच ।
कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषमे समुपस्थितम् ।
अनार्यजुष्टमस्वर्ग्यमकीर्तिकरमर्जुन ॥ २-२॥
Śrībhagavānuvāca **/**
Kutastvā kaśmalamidaṃ viṣame samupasthitam **/**
Anāryajuṣṭamasvargyamakīrtikaramarjuna **//** *2-2* **//**

कृष्ण अर्जुन से बोले:

अर्जुन, यह मैल तुम्हारे मन में कहां से आया युद्ध के बीच में? यह आर्यो के योग्य नहीं है। यह तुमको स्वर्ग में नहीं ले जाएगा, यह तुमको कीर्ति भी नहीं देगा। राजन्, ऐसा भगवान कृष्ण ने कहा।

Shri Bhagawan Says:
Whence did this dirty despondence arise in your mind in this very thick of the action? It is unworthy of the brave and the good, it is the way to ignominy and hell. Arjuna, beware.

क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ नैतत्त्वय्युपपद्यते ।
क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परन्तप ॥ २-३॥
Klaibyaṃ mā sma gamaḥ pārtha naitattvayyupapadyate **/**
Kṣudraṃ hṛdayadaurbalyaṃ tyaktvottiṣṭha parantapa **//** *2-3* **//**

अर्जुन, तपस्वी, वीर बनो, क्लीव नही, यह तुमको शोभा नहीं देता, यह छोटापन है, हृदय की दुबलता है, हे तपधारी, उठो और सुयोग्य कर्म करो।

Partha, sink not to unmanliness. It is not worthy of you. It is mean, sheer feebleness of the heart, give it up Arjuna, arise, you are scorcher of the enemy at the extreme.

अर्जुन उवाच ।
कथं भीष्ममहं सङ्ख्ये द्रोणं च मधुसूदन ।
इषुभिः प्रतियोत्स्यामि पूजार्हावरिसूदन ॥ २-४॥
Arjuna uvāca **/**
Kathaṃ bhīṣmamahaṃ saṅkhye droṇaṃ ca madhusūdana **/**
Iṣubhiḥ pratiyotsyāmi pūjārhāvarisūdana **//** *2-4* **//**

अर्जुन बोले:

हे मधुसूदन, मैं कैसे भीष्म पितामह पर, कैसे अचार्य द्रोण पर वाणों से प्रहार करूंगा? वे तो पूजा के योग्य हैं।

Said Arjuna:
O Madhusudana, how shall I engage and face Bhishma and Drona with arrows in the battle? They're worthy of reverence, even worship, O destroyer of enemies.

गुरूनहत्वा हि महानुभावान् श्रेयो भोक्तुं भैक्ष्यमपीह लोके ।
हत्वार्थकामांस्तु गुरूनिहैव भुञ्जीय भोगान् रुधिरप्रदिग्धान् ॥ २-५॥
Gurūnahatvā hi mahānubhāvān śreyo bhoktuṃ bhaikṣyamapīha loke **/**
Hatvārthakāmāṃstu gurūnihaiva bhuñjīya bhogān rudhirapradigdhān **//** *2-5* **//**

गुरुओं पर प्रहार न करके, महानुभावों की सेवा करके जीना अच्छा है। उनको मार कर जीने से तो अच्छा है मनुष्य भिक्षा मांगकर ही जी ले। इसी जीवन में यदि अर्थ और काम के लिए गुरुओं को मारूंगा तो रुधिर से लिपटे पाप को ही जीऊंगा।

It is better in this world to beg and sustain life, better than to live by killing the teachers and seniors. They are great men. If we kill them to achieve our purpose and desire here on earth, even then we live and ‘suffer’ our desires but soaked in blood.

न चैतद्विद्मः कतरन्नो गरीयो यद्वा जयेम यदि वा नो जयेयुः ।
यानेव हत्वा न जिजीविषामस्-तेऽवस्थिताः प्रमुखे धार्तराष्ट्राः ॥ २-६॥
Na caitadvidmaḥ kataranno garīyo yadvā jayema yadi vā no jayeyuḥ **/**
Yāneva hatvā na jijīviṣāmas-te'vasthitāḥ pramukhe dhārtarāṣṭrāḥ **//** *2-6* **//**

हम तो यह भी नहीं जानते कि हमारे लिए क्या अच्छा है, युद्ध करना या न करना। हो सकता है कि हम उन्हें जोत लें। यह भी हो सकता है कि वे हमें जीत लें। जिन्हें मारकर हम जीना नहीं चाहेंगे वे धृतराष्ट्र पुत्र तो हमारे सामने ही खड़े हैं।

Also, we don't know what is the better of the two: fighting or not fighting. Nor do we know whether, even if we fight, we shall win or they would win over us. But I know one thing for certain: that we would never wish to live by killing the sons of Dhritarashtra who stand before us. No one would.

कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः पृच्छामि त्वां धर्मसम्मूढचेताः ।
यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम् ॥ २-७॥
Kārpaṇyadoṣopahatasvabhāvaḥ pṛcchāmi tvāṃ dharmasammūḍhacetāḥ **/**
Yacchreyaḥ syānniścitaṃ brūhi tanme śiṣyaste'haṃ śādhi māṃ tvāṃ prapannam **//** *2-7* **//**

मेरा स्वभाव तो दयाभाव से भर गया है। मुझे मालूम नहीं कि मेरा धर्म क्या है और क्या नहीं है। जो मेरे लिए अच्छा है वह निश्चित रूप से कहिए, मुझे अपना शिष्य ही समझिए। मैं आपकी शरण में आया हूं।

My valor is gone. My very self and nature, my very identity, is overwhelmed by negation under the weight of pity. My sense of right and wrong, dharma and adharma, is lost. My mind is totally blurred. Pray say to me what is just, fair and sure, really good for me. I am your disciple. I come to you, please show me the way.

न हि प्रपश्यामि ममापनुद्याद् यच्छोकमुच्छोषणमिन्द्रियाणाम् ।
अवाप्य भूमावसपत्नमृद्धं राज्यं सुराणामपि चाधिपत्यम् ॥ २-८॥
Na hi prapaśyāmi mamāpanudyād yacchokamucchoṣaṇamindriyāṇām **/**
Avāpya bhūmāvasapatnamṛddhaṃ rājyaṃ surāṇāmapi cādhipatyam **//** *2-8* **//**

मुझे कोई ऐसा उपाय नहीं सूझता जो मेरे मन के दुःख को दूर कर सके। भूमि पर अखंड राज्य सुख को पाकर और देवलोक पर एक निर्भीक राज्य को पाकर भी मेरे मन को शांति नहीं मिल पाएगी।

I see no way to relieve me of the pain and sorrow which torments my mind and sense. I see no way even if I win unrivalled power and wealth on earth and even if I win the rule and dominion of the gods in heaven.

सञ्जय उवाच ।
एवमुक्त्वा हृषीकेशं गुडाकेशः परन्तप ।
न योत्स्य इति गोविन्दमुक्त्वा तूष्णीं बभूव ह ॥ २-९॥
Sañjaya uvāca **/**
Evamuktvā hṛṣīkeśaṃ guḍākeśaḥ parantapa **/**
Na yotsya iti govindamuktvā tūṣṇīṃ babhūva ha **//** *2-9* **//**

संजय बोले:

हृषोकेश कृष्ण को ये शब्द कहकर महातपस्वी गुडाकेश अर्जुन ने कहा: ''गोविंद मैं युद्ध नहीं करूंगा'' और चुप हो गया।

Said Sanjaya:
O lord of power and force, having said so to Hrishikesha, Krishna, Arjuna, destroyer of sloth and sleep, finally resolved and declared: Fight I will not. Having so declared to Govinda, he fell back into deep and pensive silence.

तमुवाच हृषीकेशः प्रहसन्निव भारत ।
सेनयोरुभयोर्मध्ये विषीदन्तमिदं वचः ॥ २-१०॥

Tamuvāca hṛṣīkeśaḥ prahasanniva bhārata **/**
Senayorubhayormadhye viṣīdantamidaṃ vacaḥ ***// 2-10 //***

सेनाओं के बीच में दु:खी अर्जुन को देखकर हृषोकेश कृष्ण ने हंसते हुएसे ये वचन कहे:

Then, O Bharata, in the midst of the two fighting forces, to Arjuna, sinking in despair and sorrow, Hrishikesha spoke these words in a mood as if smiling – that smile was enigmatic:-

श्रीभगवानुवाच ।
अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे ।
गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पण्डिताः ॥ २-११॥

Śrībhagavānuvāca **/**
Aśocyānanvaśocastvaṃ prajñāvādāṃśca bhāṣase **/**
Gatāsūnagatāsūṃśca nānuśocanti paṇḍitāḥ ***// 2-11 //***

श्री भगवान् ने कहा:

अर्जुन तुम उन विषयों की चिंता करते हो जिनकी चिंता करना ही नहीं चाहिए और बात ऐसी करते हो जैसे तुम बहुत बड़े विद्वान हो। किसके प्राण चले गये और किसके नहीं गये बुद्धिमान पुरुष इसकी चिंता नहीं करते।

Shri Bhagawan said:
You waste yourself on things which absolutely deserve no thought, and yet you talk as if you are the wisest man of the world. Men of knowledge think not of those who have gone past. Nor do they worry about those who are alive.

न त्वेवाहं जातु नासं न त्वं नेमे जनाधिपाः ।
न चैव न भविष्यामः सर्वे वयमतः परम् ॥ २-१२॥

Na tvevāhaṃ jātu nāsaṃ na tvaṃ neme janādhipāḥ **/**

Na caiva na bhaviṣyāmaḥ sarve vayamataḥ param **//** *2-12* **//**

न कोई ऐसा समय था जब मैं नहीं था, न ऐसा समय था जब तुम नहीं थे, न ऐसा समय था जब ये राजे महाराजे नहीं थे। न ऐसा समय होगा जब अब के पश्चात् हम सब नहीं होंगे।

It is not that there was ever a time when you, or I, or these ruling lords of the people were not there. Nor is it that all of us will not be there anymore after this time.

देहिनोऽस्मिन्यथा देहे कौमारं यौवनं जरा ।
तथा देहान्तरप्राप्तिर्धीरस्तत्र न मुह्यति ॥ २-१३॥
Dehino'sminyathā dehe kaumāraṃ yauvanaṃ jarā **/**
Tathā dehāntaraprāptirdhīrastatra na muhyati **//** *2-13* **//**

जैसे किसी शरीरधारी के शरीर में बालपन, जवानी, बुढ़ापा और फिर मृत्यु के बाद नये शरीर की प्राप्ति होती है, तो धीर पुरुष इस विषय मं कोई मोह या चिंता नहीं करते।

Just as the soul in this body attains the stage of child, boyhood, youth, and age in this human body, the same way we get into another body. The man of wisdom does not fall into the snare of these changes.

मात्रास्पर्शास्तु कौन्तेय शीतोष्णसुखदुःखदाः ।
आगमापायिनोऽनित्यास्तांस्तितिक्षस्व भारत ॥ २-१४॥
Mātrāsparśāstu kaunteya śītoṣṇasukhaduḥkhadāḥ **/**
Āgamāpāyino'nityāstāṃstitikṣasva bhārata **//** *2-14* **//**

ये तो केवल स्पर्श मात्र हैं, सर्दी और गर्मी की तरह, केवल हे भारत, ये सुख या दुःख देते हैं। हे कुंती पुत्र, ये तो आने जाने वाले हैं। सदा रहनेवाले नहीं। इन्हें धैर्य से सहन करो।

All the changes come and go. They are like the breath of air touching the human body the same way as the feel of heat and cold gives the feeling of comfort or discomfort. They are momentary, they don't last, they are transitory. Just bear them and let them go.

यं हि न व्यथयन्त्येते पुरुषं पुरुषर्षभ ।
समदुःखसुखं धीरं सोऽमृतत्वाय कल्पते ॥ २-१५॥
Yaṃ hi na vyathayantyete puruṣaṃ puruṣarṣabha **/**
Samaduḥkhasukhaṃ dhīraṃ so'mṛtatvāya kalpate **//** *2-15* **//**

हे वीर पुरुष, जिसको ये सुख-द:ख तंग नहीं करते, जो सुख-दुःख को समान मानकर इनको सहन कर लेता है, वह धीर पुरुष अमर हो जाता है।

O best of men, the man who is calm and self-possessed, whom these temporary ups and downs of life do not trouble, whom pleasure and pain do not disturb, such a person deserves to be free from the ravages of mortality.

नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः ।
उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वनयोस्तत्त्वदर्शिभिः ॥ २-१६॥
Nāsato vidyate bhāvo nābhāvo vidyate sataḥ **/**
Ubhayorapi dṛṣṭo'ntastvanayostattvadarśibhiḥ ***// 2-16 //***

जो भी असत् है, वह कभी विद्यमान नहीं होता, जो सत् है उसका कभी अभाव (नाश) नहीं होता। और सत्य असत्य के मध्य एक और सत्य है जिसका दर्शन तत्वदर्शी महापुरुष ही कर सकते हैं।
That which is not, does not come into existence, and that which is, cannot go out of existence. Of course, those who know the essence of both in reality see the mystery of existence as well as of non-existence.

अविनाशि तु तद्विद्धि येन सर्वमिदं ततम् ।
विनाशमव्ययस्यास्य न कश्चित्कर्तुमर्हति ॥ २-१७॥
Avināśi tu tadviddhi yena sarvamidaṃ tatam **/**
Vināśamavyayasyāsya na kaścitkartumarhati ***// 2-17 //***

जो इस शरीर में सर्वव्यापक है, वह तो अविनाशी है। उसका ह्रास कभी नहीं हो सकता । उसका विनाश कोई नहीं कर सकता।
Know that mysterious spiritual entity, the atma, which pervades this whole body system. It is avyaya, imperishable. None can bring about the destruction of this indestructible entity.

अन्तवन्त इमे देहा नित्यस्योक्ताः शरीरिणः ।
अनाशिनोऽप्रमेयस्य तस्माद्युध्यस्व भारत ॥ २-१८॥
Antavanta ime dehā nityasyoktāḥ śarīriṇaḥ **/**
Anāśino'prameyasya tasmādyudhyasva bhārata ***// 2-18 //***

ये शरीर सब नाशवान हैं। शरीर के अंदर जो आत्मा है वह नित्य अविनाशी है। अविनाशी को किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं है। इसलिए हे भरतवंशी वीर, तुम युद्ध करो।
The bodies, which this indestructible entity takes on one after another since time immemorial, are subject to decay and death at the end of each period of life. But in spite of those temporal fluctuations of bodily existence, the soul survives and remains as it is in the essence: eternal, indestructible, unbound by time or place.

Therefore, O Scion of Bharatas, stand up and fight.

य एनं वेत्ति हन्तारं यश्चैनं मन्यते हतम् ।
उभौ तौ न विजानीतो नायं हन्ति न हन्यते ॥ २-१९॥
Ya enaṃ vetti hantāraṃ yaścainaṃ manyate hatam **/**
Ubhau tau na vijānīto nāyaṃ hanti na hanyate **//** *2-19* **//**

जो समझता है कि मैं ने मार दिया। या जो समझता है कि यह मर गया, ये दोनों वास्तविकता को नहीं जानते। वास्तविक सत्य यह है कि आत्मा न कोई मारता है, न कभी मरता है।

Anyone that believes that it (Atma) is the killer, or any one that believes that it is killed, both of them do not know, ignorant of the real fact that it neither kills nor is it killed.

न जायते म्रियते वा कदाचिन् नायं भूत्वा भविता वा न भूयः ।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥ २-२०॥
Na jāyate mriyate vā kadācin nāyaṃ bhūtvā bhavitā vā na bhūyaḥ **/**
Ajo nityaḥ śāśvato'yaṃ purāṇo na hanyate hanyamāne śarīre **//** *2-20* **//**

आत्मा का न कभी जन्म होता ह, न कभी मरता है, यह है तो है। न होकर फिर कभी होता है। आत्मा अजन्मा है, नित्य है, सदा रहने वाला है, अनादि कालीन है, शरीर के साथ नहीं मरता, केवल शरीर मरता ह।

Never is it born, never does it die, nor is it that, having been in temporal existence in body for a limited time span, it would not come back again in body for another period of time. Partha, it is never born from non-existence, it is eternal, ever existent, timeless. It is never killed although it lives in a mortal body.

वेदाविनाशिनं नित्यं य एनमजमव्ययम् ।
कथं स पुरुषः पार्थ कं घातयति हन्ति कम् ॥ २-२१॥
Vedāvināśinaṃ nityaṃ ya enamajamavyayam **/**
Kathaṃ sa puruṣaḥ pārtha kaṃ ghātayati hanti kam **//** *2-21* **//**

आत्मा अविनाशी है, नित्य है, न कभी घटता बढ़ता है। ऐसा है तो कौन इसे मारता है। पार्थ, कौन कभी इसका विनाश करता है।

If a person knows the atma (soul) as indestructible, eternal, unborn and undying, imperishable and undecaying, whom does that person strike to death, whom does that person kill? None.

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि ।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा-न्यन्यानि संयाति नवानि देही ॥ २-२२॥

Vāsāṃsi jīrṇāni yathā vihāya navāni gṛhṇāti naro'parāṇi **/**
Tathā śarīrāṇi vihāya jīrṇā-nyanyāni saṃyāti navāni dehī **// 2-22 //**

जैसे कोई साधारण पुरुष पुराने कपड़े छोड़कर नए कपड़े धारण कर लेता है, ऐसे ही पुराने जर्जर शरीर को छोड़कर आत्मा नये शरीर धारण कर लेता है। (इसी तरह यह चक्र चलता रहता है।)

Just as a person relinquishes old and worn out clothes and takes on to new ones, similarly a person gives up the old worn-out body at the end of each span of age and takes on a new one at the beginning of another life span. (So the cycle goes on and on and on….)

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः ।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ॥ २-२३॥
Nainaṃ chindanti śastrāṇi nainaṃ dahati pāvakaḥ **/**
Na cainaṃ kledayantyāpo na śoṣayati mārutaḥ **// 2-23 //**

आत्मा को शस्त्र काट नहीं सकते, अग्नि इसको जला नहीं सकता, जल इसको गला नहीं सकता। वायु इसको सुखा नहीं सकता।

Weapons cut it not to death, fire burns it not, waters soak it not to rot, air dries it not to evaporate to extinction.

अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयमक्लेद्योऽशोष्य एव च ।
नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः ॥ २-२४॥
Acchedyo'yamadāhyo'yamakledyo'śoṣya eva ca **/**
Nityaḥ sarvagataḥ sthāṇuracalo'yaṃ sanātanaḥ **// 2-24 //**

आत्मा अच्छेद्य है, अदाह्य है, अक्लेद्य है, अशोष्य है, नित्य है, सर्वगत है, कहीं भी जा सकता है। जहां जाता है, ठहर जाता है, अचल है, सनातन है।

It cannot be cut to pieces, it can not be burnt to ash, it cannot be diluted to particles, it cannot be dried to dust. It is immortal, all reaching, anywhere, firm, immovable, unshakable, constant and eternal.

अव्यक्तोऽयमचिन्त्योऽयमविकार्योऽयमुच्यते ।
तस्मादेवं विदित्वैनं नानुशोचितुमर्हसि ॥ २-२५॥
Avyakto'yamacintyo'yamavikāryo'yamucyate **/**
Tasmādevaṃ viditvainaṃ nānuśocitumarhasi **// 2-25 //**

आत्मा अव्यक्त है, इसके भाग नहीं हो सकते, अचिन्त्य है, विचार में नहीं आता, अविकार है, इसमें कोई बदलाख नहीं होता, इस कारण इसको जानकार किसी को भी कोई दु:ख या चिंता नहीं होनी चाहिए। तुमको भी नहीं।

It is undefinable, beyond thought, invariable, it is said. For this reason, knowing what it is, you need not worry about it-- because nothing untoward can happen to it.

अथ चैनं नित्यजातं नित्यं वा मन्यसे मृतम् ।
तथापि त्वं महाबाहो नैवं शोचितुमर्हसि ॥ २-२६॥
Atha cainaṃ nityajātaṃ nityaṃ vā manyase mṛtam **/**
Tathāpi tvaṃ mahābāho naivaṃ śocitumarhasi **//** *2-26* **//**

और यदि तुम आत्मा को नित्य नवजात मानते हो, या नित्य मरने वाला मानते हो तो भी, हे महाबाहु, तुम्हें कोई दु:ख या चिंता नहीं होनी चाहिए।

And also, even if you believe that it is always being born and dying, born and dying again and again, even then, O man of mighty arm, you need not worry about it.

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च ।
तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि ॥ २-२७॥
Jātasya hi dhruvo mṛtyurdhruvaṃ janma mṛtasya ca **/**
Tasmādaparihārye'rthe na tvaṃ śocitumarhasi **//** *2-27* **//**

क्योंकि जो जन्मा है वह अवश्य मरेगा, और जो मरा ह उसका जन्म अवश्य होगा। अतः जो अवश्यम्भावी है उसकी क्या चिंता, क्या दु:ख?

Whoever is born that is sure to die, and the dead is sure to be reborn. Hence also, in view of the inevitable, you must not worry about the warriors.

अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्तमध्यानि भारत ।
अव्यक्तनिधनान्येव तत्र का परिदेवना ॥ २-२८॥
Avyaktādīni bhūtāni vyaktamadhyāni bhārata **/**
Avyaktanidhanānyeva tatra kā paridevanā **//** *2-28* **//**

सभी आत्मा प्रारंभ में अव्यक्त होते हैं, जन्म लेने पर व्यक्त हो जाते हैं, क्योंकि उनका जन्म अलग-अलग होता है। मरने पर फिर अलग होते हैं। फिर अवश्यम्भावी का शाक क्यों?

All specific forms of life are unmanifest in the beginning, they manifest well defined in the middle and they again go into the unseen after death. Hence what cause is there for sorrow in this inevitable process?

आश्चर्यवत्पश्यति कश्चिदेन-माश्चर्यवद्वदति तथैव चान्यः ।
आश्चर्यवच्चैनमन्यः श‍ृणोति श्रुत्वाप्येनं वेद न चैव कश्चित् ॥ २-२९॥

Āścaryavatpaśyati kaścidena-māścaryavadvadati tathaiva cānyaḥ **/**
Āścaryavaccainamanyaḥ śṛṇoti śrutvāpyenaṃ veda na caiva kaścit **//** *2-29* **//**

इस को कोई तो आश्चर्यवत् देखता है, कोई आश्चर्यवत् बात करता है। ऐसे ही दूसरे लोग विचार करते हैं। दूसरे आश्चर्यवत् सुनते हैं। सुनकर भी कोई इसे जानता नहीं।

One views this mysterious process of life and death with wonder. Another speaks of it with wonder the same way. Someone hears of it with wonder and amazement. And having heard of it all this way, no one knows of it the certain way, as it is.

देही नित्यमवध्योऽयं देहे सर्वस्य भारत ।
तस्मात्सर्वाणि भूतानि न त्वं शोचितुमर्हसि ॥ २-३०॥
Dehī nityamavadhyo'yaṃ dehe sarvasya bhārata **/**
Tasmātsarvāṇi bhūtāni na tvaṃ śocitumarhasi **//** *2-30* **//**

शरीरधारी आत्मा को कोई मार नहीं सकता। इस कारण सभी आत्माओं के संबंध में तुम्हें कोई दु:ख या चिंता नहीं होना चाहिए।

The atma (soul) that resides in the body form of all, O Bharata, can never be killed. Therefore you should not worry about any form of living being, never about the warriors upfront.

स्वधर्ममपि चावेक्ष्य न विकम्पितुमर्हसि ।
धर्म्याद्धि युद्धाच्छ्रेयोऽन्यत्क्षत्रियस्य न विद्यते ॥ २-३१॥
Svadharmamapi cāvekṣya na vikampitumarhasi **/**
Dharmyāddhi yuddhācchreyo'nyatkṣatriyasya na vidyate **//** *2-31* **//**

अपने धर्म का विचार करके भी तुमको कोई भय या चिंता नहीं करना चाहिए। क्योंकि धर्म से क्षत्रिय के लिए युद्ध से श्रेयस्कर कुछ नही होता।

And watch out: think of your own Dharma, the duty incumbent on you. That way too you must not be fickle minded. There is nothing better and higher than fighting as part of your Dharma, worthy of a worrior.

यदृच्छया चोपपन्नं स्वर्गद्वारमपावृतम् ।
सुखिनः क्षत्रियाः पार्थ लभन्ते युद्धमीदृशम् ॥ २-३२॥
Yadṛcchayā copapannaṃ svargadvāramapāvṛtam **/**
Sukhinaḥ kṣatriyāḥ pārtha labhante yuddhamīdṛśam **//** *2-32* **//**

दैव की इच्छा से स्वर्गद्वार तुम्हारे लिए खुल गया है। ऐसा द्वार क्षत्रियों को दैव कृपा से ही मिलता है।
This battle is the gateway to paradisal bliss open to you by the will divine. O Partha,

only the fortunate few among Kshatriyas find such a war-door open to them by a lucky chance and divine will.

अथ चेत्त्वमिमं धर्म्यं सङ्ग्रामं न करिष्यसि ।
ततः स्वधर्मं कीर्तिं च हित्वा पापमवाप्स्यसि ॥ २-३३॥
Atha cettvamimaṃ dharmyaṃ saṅgrāmaṃ na kariṣyasi **/**
Tataḥ svadharmaṃ kīrtiṃ ca hitvā pāpamavāpsyasi **//** *2-33* **//**

यदि तुम इस धर्म युद्ध को नहीं करोगे तो अपने धर्म और कीर्ति को छोड़कर केवल पाप ही कमाओगे।

And if you do not engage in this battle which is for the sake of righteousness and Dharma as your sacred duty, you will neglect your sacred duty, tarnish your reputation, and suffer the sin of remiss.

अकीर्तिं चापि भूतानि कथयिष्यन्ति तेऽव्ययाम् ।
सम्भावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते ॥ २-३४॥
Akīrtiṃ cāpi bhūtāni kathayiṣyanti te'vyayām **/**
Sambhāvitasya cākīrtirmaraṇādatiricyate **//** *2-34* **//**

यदि तुम इस धार्मिक युद्ध को नहीं करोगे तो लोग सदा तुम्हारे बारे में अपकीर्तियुक्त शब्द बोलेंगे और कीर्तिमान क्षत्रिय के लिए अपकीर्ति मृत्यु से भी बढ़कर होती है।

And the people around will speak loud and bold of your disreputation beyond repair, and that infamy for the man of honor is worse than death.

भयाद्रणादुपरतं मंस्यन्ते त्वां महारथाः ।
येषां च त्वं बहुमतो भूत्वा यास्यसि लाघवम् ॥ २-३५॥
Bhayādraṇāduparataṃ maṃsyante tvāṃ mahārathāḥ **/**
Yeṣāṃ ca tvaṃ bahumato bhūtvā yāsyasi lāghavam **//** *2-35* **//**

महारथी क्षत्रिय, तुमको भयभीत अर्जुन के नाम से पुकारेंगे और तुम महामान्य होकर भी छोटे हो जाओगे।

Valorous warriors of the chariot will think and speak of you with contempt as the man run away from battle out of fear. Think of your fame resounding among them earlier, and mind the fall and the pity of it, Arjuna.

अवाच्यवादांश्च बहून्वदिष्यन्ति तवाहिताः ।
निन्दन्तस्तव सामर्थ्यं ततो दुःखतरं नु किम् ॥ २-३६॥
Avācyavādāṃśca bahūnvadiṣyanti tavāhitāḥ **/**
Nindantastava sāmarthyaṃ tato duḥkhataraṃ nu kim **//** *2-36* **//**

तुम्हारे विरोधी कितनी ही अवाच्य (उल्टी–सीधी) बातें करेंगे। तुम्हारे संबंध में निन्दित बातें करेंगे। इससे बड़ी दु:ख की बात और क्या होगी?

Your enemies will speak many despicable words against you, condemning your valour and competence. What can be sadder and more painful than that?

हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम् ।
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः ॥ २-३७॥
Hato vā prāpsyasi svargaṃ jitvā vā bhokṣyase mahīm **/**
Tasmāduttiṣṭha kaunteya yuddhāya kṛtaniścayaḥ **//** *2-37* **//**

यदि तुम मारे गए तो स्वर्ग में जाओगे। जीत गए तो भूमि पर राज्य का सुख भोगोगे। अत: हे कुंती पुत्र, युद्ध का निश्चिय करके उठो और संग्राम करो।

If you are killed in the battle, you straight go to Swarga, paradise, as a martyr on the altar of Dharma. If you win, you share and enjoy the dominion of the earth. Therefore, arise, son of Kunti. Decide, determine and fight out the enemies.

सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ ।
ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि ॥ २-३८॥
Sukhaduḥkhe same kṛtvā lābhālābhau jayājayau **/**
Tato yuddhāya yujyasva naivaṃ pāpamavāpsyasi **//** *2-38* **//**

सुख–द:ख को समान समझ कर, लाभ और हानि को साथ रखकर, जय और पराजय को बराबर जानकर, युद्ध करो। कोई पाप नहीं होगा।

Equanimous between pleasure and pain, loss and gain, and between victory and defeat, dedicate yourself to war and thus, be free from sin and disreputation.

एषा तेऽभिहिता साङ्ख्ये बुद्धिर्योगे त्विमां शृणु ।
बुद्ध्या युक्तो यया पार्थ कर्मबन्धं प्रहास्यसि ॥ २-३९॥
Eṣā te'bhihitā sāṅkhye buddhiryoge tvimāṃ śṛṇu **/**
Buddhyā yukto yayā pārtha karmabandhaṃ prahāsyasi **//** *2-39* **//**

यह तुम्हें सांख्य कहा गया। योग संबंधी अब बात सुनो। योग बुद्धि से पाप या कर्मबन्ध भावना छूट जाएगी।

I have spoken to you of Sankhya philosophy (with intellectual approach to life) which discriminates between body and soul. Now listen to the Buddhi (knowledge) in the context of karma yoga by which you won't be bound by Karma.

नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति प्रत्यवायो न विद्यते ।
स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात् ॥ २-४०॥
Nehābhikramanāśo'sti pratyavāyo na vidyate **/**
Svalpamapyasya dharmasya trāyate mahato bhayāt **//** *2-40* **//**

कर्म प्रारंभ का नाश नहीं होता। उल्टा परिणाम भी नहीं होता। कर्म का थोड़ा सा अंश भी महान भय से छुड़ा देता है।

Karma is ever on, No cessation, No going back. What you sow, so it fructifies. If you understand even a little bit of it and pursue it this way as duty, it will save you from grave fears of the adverse.

व्यवसायात्मिका बुद्धिरेकेह कुरुनन्दन ।
बहुशाखा ह्यनन्ताश्च बुद्धयोऽव्यवसायिनाम् ॥ २-४१॥
Vyavasāyātmikā buddhirekeha kurunandana **/**
Bahuśākhā hyanantāśca buddhayo'vyavasāyinām **//** *2-41* **//**

कर्म योग में एकाग्र बुद्धि एक ही होती है। जो एकाग्र बुद्धि नहीं होते उनकी बुद्धि बिखरी सी रहती है।

O Scion of the Kurus, the intelligence that is focussed, concentrated, constant, intensive, is one, undivided. The Buddhi of those, who do not focus their mind, is diversified over many loose ends like the wild branches of a tree (though the tree is an offspring of the same one seed).

यामिमां पुष्पितां वाचं प्रवदन्त्यविपश्चितः ।
वेदवादरताः पार्थ नान्यदस्तीति वादिनः ॥ २-४२॥
Yāmimāṃ puṣpitāṃ vācaṃ pravadantyavipaścitaḥ **/**
Vedavādaratāḥ pārtha nānyadastīti vādinaḥ **//** *2-42* **//**

एकाग्र बुद्धि जिनकी नहीं है, वे रंग बिरंगी बातें करते हैं। वेदवाद में फंसकर अपनी अपनी हांकते हुए एक बात को पकड़ कर बैठ जाते हैं। दूसरी बात या विचार सुनते ही नहीं।

The unwise speak in colorful diversified language, even debating on the Veda, bound in their own frozen and fossilized style of knowledge, and saying this is all. There is nothing else or beyond of value.

कामात्मानः स्वर्गपरा जन्मकर्मफलप्रदाम् ।
क्रियाविशेषबहुलां भोगैश्वर्यगतिं प्रति ॥ २-४३॥
Kāmātmānaḥ svargaparā janmakarmaphalapradām **/**
Kriyāviśeṣabahulāṃ bhogaiśvaryagatiṃ prati **//** *2-43* **//**

सकामकर्मी, स्वर्ग विषयी, कर्मफल प्रार्थी, भोग और ऐश्वर्य की खोज में अनेक क्रिया विशेष करते हैं।

Lost to desire, focussed only on pleasures of a dream paradise, they speak of a life of promise and golden fruit of Janma and Karma, Karma of a glittering beauty leading to pleasure and paradisal grandeur.

भोगैश्वर्यप्रसक्तानां तयापहृतचेतसाम् ।
व्यवसायात्मिका बुद्धिः समाधौ न विधीयते ॥ २-४४॥
Bhogaiśvaryaprasaktānāṃ tayāpahṛtacetasām ।
Vyavasāyātmikā buddhiḥ samādhau na vidhīyate ॥ *2-44*॥

भोग और ऐश्वर्य की खोज में मन लगाते हैं और क्रिया विशेष की खोज में अपनी शक्ति का ह्रास करते हैं। क्रिया अक्रिया में उनकी शक्ति भटकती रहती है और समाधि में एकाग्र नहीं लगती।

The divided Buddhi of such persons doesn't focus on the right Karma: dedicated to Bhoga and dreamy grandeur, their mind is taken away by the lure of pleasure and the transient beauty of the world. They are unable to concentrate on the center.

त्रैगुण्यविषया वेदा निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन ।
निर्द्वन्द्वो नित्यसत्त्वस्थो निर्योगक्षेम आत्मवान् ॥ २-४५॥
Traiguṇyaviṣayā vedā nistraiguṇyo bhavārjuna **।**
Nirdvandvo nityasattvastho niryogakṣema ātmavān **॥** *2-45* **॥**

वेद त्रिगुणात्मिक हैं। तुम्हें त्रिगुण से ऊपर उठना है। निद्वंद, सत्त्वस्थ निर्योग, क्षेम और आत्मवान बनना है। यही रास्ता योग का है।

Their knowledge dominantly is knowledge of the world of change in the field of Prakrti: Satoguna (thought), Rajoguna (energy), and Tamoguna (matter). Rise above this world of threefold change, dedicate yourself to eternal truth of body and atma. Forget about the collection of toys and the protection and promotion of these. Give it up, rise above, and dedicate yourself to the Atma, permanent good, constant truth and eternal Dharma.

यावानर्थ उदपाने सर्वतः सम्प्लुतोदके ।
तावान्सर्वेषु वेदेषु ब्राह्मणस्य विजानतः ॥ २-४६॥
Yāvānartha udapāne sarvataḥ samplutodake **।**
Tāvānsarveṣu vedeṣu brāhmaṇasya vijānataḥ **॥** *2-46* **॥**

गांव के तालाब में जितनी श्रद्धा होती है केवल उतनी ही वेद के शब्दों में होनी चाहिए। जिसने वेद के आत्मा को देख लिया वही ब्राह्मण है।

Brahmana, the man of real knowledge, is interested in worldly knowledge only as much as he would be interested in a small pool of water. The ocean is unbound and fathomless. Be for the ocean, beyond the pool.

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ॥ २-४७॥
Karmaṇyevādhikāraste mā phaleṣu kadācana **/**
Mā karmaphalaheturbhūrmā te saṅgo'stvakarmaṇi **// 2-47 //**

कर्म करना तुम्हारा अधिकार है। फल किसी और की शक्ति है, इसलिए कर्म कर, अकर्म में तुम्हारा मन न लगे।

You have all your right to Karma, to action. The fruit of success or unsuccess is beyond your comprehension and control. Act to your highest competence, but once you have acted, your action creates its own vibrations and those vibrations become a part of cosmic dynamics. (You can throw a pebble in the sea, but the waves it causes are not under your control). So let your action be at the best, the result will not be determined by your desire for the fruit, the way you want. Nor should you give up the active life for fear of the uncertainty of the result.

योगस्थः कुरु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा धनञ्जय ।
सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते ॥ २-४८॥
Yogasthaḥ kuru karmāṇi saṅgaṃ tyaktvā dhanañjaya **/**
Siddhyasiddhyoḥ samo bhūtvā samatvaṃ yoga ucyate **// 2-48 //**

योगस्थ होकर कर्म कर, फल का संग छोड़ दे, धनन्जय, सिद्धि असिद्धि की चिंता मत कर। समत्व ही योग है।

Do your karma in a steady state of concentrated mind, Dhananjaya, victor of the wealth and values of life. Give up your bondage within small selfish considerations. Be steady, whether you succeed or do not succeed, leave it to the higher powers. This steadiness, this constancy, this equanimity of the mind, will and atma is called yoga.

दूरेण ह्यवरं कर्म बुद्धियोगाद्धनञ्जय ।
बुद्धौ शरणमन्विच्छ कृपणाः फलहेतवः ॥ २-४९॥
Dūreṇa hyavaraṃ karma buddhiyogāddhanañjaya **/**
Buddhau śaraṇamanviccha kṛpaṇāḥ phalahetavaḥ **// 2-49 //**

धनन्जय, बुद्धियोग से सकाम कर्म अच्छा नहीं है। बुद्धि योग के शरण में जा। फल की इच्छा छोड़ दे, फल की इच्छा कृपण व्यक्ति किया करते हैं।

O victor of the wealth and power of life, worldly action without steady discipline of the mind is by far short of the steady discipline of the mind and soul. Firmly dedicate yourself to the yogic discipline of the mind, and act. If you act with selfish motive for personal gain, know that such persons are poor in mind and culture of the spirit.

बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृतदुष्कृते ।
तस्माद्योगाय युज्यस्व योगः कर्मसु कौशलम् ॥ २-५०॥
Buddhiyukto jahātīha ubhe sukṛtaduṣkṛte **/**
Tasmādyogāya yujyasva yogaḥ karmasu kauśalam **//** *2-50* **//**

बुद्धियोग से मनुष्य कर्म का ध्यान रखता है। सृकृत दुष्कृत का नहीं केवल कर्म का, इसलिए कर्मयोग की चिंता कर, योग कर्म का कौशल है।

If your will and intelligence is rooted and firm in the state of consistency, then you rise above the personal considerations of 'good action' or 'bad action' leading to success or failure. Whatever happens as a result of your action, you stay unscathed, your real self greater and higher than success or failure. Dedicate yourself to this yoga of action. Yoga is the expertise in performance in the state of full awareness and enlightenment. Yoga is not escape from life and action. Be at the center of the whirlpool.

कर्मजं बुद्धियुक्ता हि फलं त्यक्त्वा मनीषिणः ।
जन्मबन्धविनिर्मुक्ताः पदं गच्छन्त्यनामयम् ॥ २-५१॥
Karmajaṃ buddhiyuktā hi phalaṃ tyaktvā manīṣiṇaḥ **/**
Janmabandhavinirmuktāḥ padaṃ gacchantyanāmayam **//** *2-51* **//**

बुद्धियोग से कर्म करने वाले मनीषी फल की इच्छा छोड़कर कर्म करते हैं। और जन्मबन्ध से मोक्ष पाकर निर्लेप पद की प्राप्ति करते हैं।

Persons of steady and enlightened mind, far above the lower considerations of the results and prepared for either, are free from limitations and bondage of the lower world of life. Indeed they rise above and reach the state of highest spirituality and freedom.

यदा ते मोहकलिलं बुद्धिर्व्यतितरिष्यति ।
तदा गन्तासि निर्वेदं श्रोतव्यस्य श्रुतस्य च ॥ २-५२॥
Yadā te mohakalilaṃ buddhirvyatitariṣyati **/**
Tadā gantāsi nirvedaṃ śrotavyasya śrutasya ca **//** *2-52* **//**

जब तेरी बुद्धि मोह रूपी दलदल से पार हो जाएगी, तब तुम सुने और सुनने योग्य सारे झमेले से पार होकर शुद्ध विचार और कर्म प्राप्त कर लोगे।

When your mind breaks through the bonds of selfish love, depression and paralysis of the will, then you will rise to the state of freedom from whatever depressive you have heard or might hear.

श्रुतिविप्रतिपन्ना ते यदा स्थास्यति निश्चला ।
समाधावचला बुद्धिस्तदा योगमवाप्स्यसि ॥ २-५३॥
Śrutivipratipannā te yadā sthāsyati niścalā **/**
Samādhāvacalā buddhistadā yogamavāpsyasi **//** *2-53* **//**

सुनी सुनाई बातों से ऊपर उठकर जब तुम्हारी बुद्धि निश्चिल शुद्ध विचार और योगकर्म पर ठहर जाएगी तब तुम कर्म योग पर अरूढ़ हो जाओगे।

When your mind, if it is disturbed, diversified and depressed by what you have heard or experienced, at a lower level, rises above and steadies in a state of firmness, then your spirit will be calm and constant in the state of yoga, concentrated, focussed and dedicated to action. Then you will recover your real self, and be attached to the higher purpose of life----.

अर्जुन उवाच ।
स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव ।
स्थितधीः किं प्रभाषेत किमासीत व्रजेत किम् ॥ २-५४॥
Arjuna uvāca **/**
Sthitaprajñasya kā bhāṣā samādhisthasya keśava **/**
Sthitadhīḥ kiṃ prabhāṣeta kimāsīta vrajeta kim **//** *2-54* **//**

अर्जुन बोलेः

केशव, स्थित प्रज्ञ की भाषा (लक्षण) क्या है, स्थित बुद्धि पुरुष कैसे बोलता है, कैसे बैठता है, कैसे चलता है?

Says Arjuna:
Keshawa, how do you describe or define a person of steady mind, settled in a state of Samadhi, total harmony of feeling (emotion, passion), will and knowledge (awareness), balanced in the union of sense, mind and soul? How does he speak, sit and move (in a state of balance and unity of body mind and soul)?

श्रीभगवानुवाच ।
प्रजहाति यदा कामान्सर्वान्पार्थ मनोगतान् ।
आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते ॥ २-५५॥
Śrībhagavānuvāca **/**
Prajahāti yadā kāmānsarvān pārtha manogatān **/**
Ātmanyevātmanā tuṣṭaḥ sthitaprajñastadocyate **//** *2-55* **//**

भगवान कृष्ण बोलेः

जो अपने मन के विचारों को, इच्छाओं को, हे पार्थ, आत्मसात् करके आत्मा में ही संतुष्ट होकर विचरता है, उसे स्थितधो कहा जाता है।

Says Krishna:
when a person gives up and rises above all desires that fluctuate in the mind at the selfish level, and, when he is happy at heart, and self-satisfied, self-contained in the very soul, then he is called a man of balanced mind. (Refer to the scales in a state of perfect balance, no fluctuation in the beam yet in a state of optimum activeness and tension, like the string of a bow.)

दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः ।
वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते ॥ २-५६॥
Duḥkheṣvanudvignamanāḥ sukheṣu vigataspṛhaḥ **/**
Vītarāgabhayakrodhaḥ sthitadhīrmunirucyate **//** *2-56* **//**

जो दुःख में मन से दुःखी नहीं होता। सुख में कामना नहीं करता, जो राग और भय क्रोध से ऊपर उठ गया है, और उसको स्थित प्रज्ञ कहते है।

In the state of suffering, no depression of the mind, in the state of pleasure, no celebration's overflow; no attachment, fear and anger all gone. That is the state of a muni, man of thought, settled at peace in the mind and spirit.

यः सर्वत्रानभिस्नेहस्तत्तत्प्राप्य शुभाशुभम् ।
नाभिनन्दति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ २-५७॥
Yaḥ sarvatrānabhisnehastattatprāpya śubhāśubham **/**
Nābhinandati na dveṣṭi tasya prajñā pratiṣṭhitā **//** *2-57* **//**

जो स्नेह और द्रोह से ऊपर उठ गया, जो अच्छा बुरा सब सह लेता है, न प्रसन्न होता है, न द्वेष करता है, सो स्थिर बुद्धि है।

Always, everywhere, free from selfish attachment, neither overjoyed with the good, nor ever depressed with the bad, such a person is a man of balanced mind.

यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः ।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ २-५८॥
Yadā saṃharate cāyaṃ kūrmo'ṅgānīva sarvaśaḥ **/**
Indriyāṇīndriyārthebhyastasya prajñā pratiṣṭhitā **//** *2-58* **//**

जैसे कछुवा अंगों को समेट लेता है। वैसे जो अपने मन और इंद्रियों को विषयों से हटा लेता है, वह स्थित प्रज्ञ है।

Just as a tortoise withdraws all its organs of sense, the same way the person who withdraws his senses and will from the objects of passion is a man of balanced mind. He is a master of his mind and senses, he is not their slave.

विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिनः ।
रसवर्जं रसोऽप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तते ॥ २-५९॥
Viṣayā vinivartante nirāhārasya dehinaḥ **/**
Rasavarjaṃ raso'pyasya paraṃ dṛṣṭvā nivartate **//** *2-59* **//**

निराहार मनुष्यों के विषय तो समाप्त हो जाते हैं, पर उनका रस और इच्छा बनी रहती है। वह रस और इच्छा भी भगवान् दर्शन से मिट जाते हैं। ऐसे व्यक्ति को स्थित प्रज्ञ कहते हैं।

If a person abstains from food for example, i.e., food of the senses, he may control his hunger but he continues to fall a prey to the taste and temptation for those objects of sense and pleasure. But the man of balanced mind rises above even the taste and temptation for the food of senses. This can so happen only if the man dedicates himself to the highest and the ultimate Self.

यततो ह्यपि कौन्तेय पुरुषस्य विपश्चितः ।
इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मनः ॥ २-६०॥
Yatato hyapi kaunteya puruṣasya vipaścitaḥ **/**
Indriyāṇi pramāthīni haranti prasabhaṃ manaḥ **//** *2-60* **//**

हे कुंती पुत्र! साधना करते हुए भी अच्छे-अच्छे बुद्धिमान पुरुषों की इंद्रियां चंचल होकर उनके मन को बलपूर्वक खींचती रहती है।

Even in the case of the man of wisdom, O son of Kunti, the taste and temptation for the food of the senses may assert, because they are rebellious and may subdue the mind.

तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्परः ।
वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ २-६१॥
Tāni sarvāṇi saṃyamya yukta āsīta matparaḥ **/**
Vaśe hi yasyendriyāṇi tasya prajñā pratiṣṭhitā **//** *2-61* **//**

उन इंद्रियों को जो वश में करके शांति से बैठे हैं, जो मेरे परायण मन को लगाता है वह स्थित प्रज्ञ कहलाता है। क्योंकि उसकी इंद्रियां उसके आत्मावश में है।

Therefore control your mind and senses, focus on me, dedicate your sense and mind to me, and sit and think what you do. The man whose senses and mind are under control of the spirit, he is a man of balanced mind

ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते ।
सङ्गात्सञ्जायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते ॥ २-६२॥
Dhyāyato viṣayānpuṃsaḥ saṅgasteṣūpajāyate **/**
Saṅgātsañjāyate kāmaḥ kāmātkrodho'bhijāyate **//** *2-62* **//**

विषयों का ध्यान करते करते मनुष्य का विषयों में संग हो जाता है। संग से काम उत्पन्न होते हैं। काम से क्रोध होता है।

What happens if the senses and mind are not under control of the atma?
When the mind is attracted by the objects of sense, the man gets attached to the objects. That is the stage of fascination. Fascination leads to passion and inordinate desire. If the desire is not fulfilled it leads to anger and frustration.

क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः ।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ॥ २-६३॥
Krodhādbhavati sammohaḥ sammohātsmṛtivibhramaḥ **/**
Smṛtibhraṃśād buddhināśo buddhināśātpraṇaśyati **//** *2-63* **//**

क्रोध से सम्मोहन होता है, से सम्मोहन से बुद्धि भ्रष्ट होती है, और बुद्धि भ्रष्ट होने से आत्म तत्त्व की स्वच्छता नष्ट हो जाती है।

Anger and frustration leads to hypnosis, and hypnosis leads to confusion of mind and memory. Confusion of memory leads to loss of reason, and when reason is lost, man ends up in self loss. Nothing remains of the man.

रागद्वेषविमुक्तैस्तु विषयानिन्द्रियैश्चरन् ।
आत्मवश्यैर्विधेयात्मा प्रसादमधिगच्छति ॥ २-६४॥
Rāgadveṣavimuktaistu viṣayānindriyaiścaran **/**
Ātmavaśyairvidheyātmā prasādamadhigacchati **//** *2-64* **//**

जो राग द्वेष से मुक्त है, और मुक्त अवस्था में विषयों का सेवन करता है। इस प्रकार आत्मावशी भगवान् के प्रसाद को प्राप्त करता है।

Empirical and rational approach:
When the senses and mind are free from Raga and Dwesha (involvement and aversion) and the atma uses them to experience the objects with detachment in the state of self control, then the atma is blessed with Prasada, the Grace of God.

प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपजायते ।
प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते ॥ २-६५॥
Prasāde sarvaduḥkhānāṃ hānirasyopajāyate **/**
Prasannacetaso hyāśu buddhiḥ paryavatiṣṭhate **//** *2-65* **//**

भगवान् के प्रसाद से सब दुःखों का निराकरण हो जाता है। चित्त प्रसन्न हो जाता है, और प्रसन्न चित्त से बुद्धि शोध की ही स्थिति हो जाती है।

In the state of Grace (Bliss), there is the end of all pain and suffering, and in that state of spiritual joy, the intellect and intelligence (Buddhi) is always and naturally undisturbed in the state of settlement.

नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना ।
न चाभावयतः शान्तिरशान्तस्य कुतः सुखम् ॥ २-६६॥
Nāsti buddhirayuktasya na cāyuktasya bhāvanā **/**
Na cābhāvayataḥ śāntiraśāntasya kutaḥ sukham **//** *2-66* **//**

जो भगवत् प्रसाद से अयुक्त है, उसके मन में भावना नहीं होती। भावना के बिना शांति नहीं हो सकती और शांति विहीन को सुख नहीं होता।

If you're not dedicated to Divinity, your intelligence is lost. Nor is the man of lost intelligence, nor you, focussed, nor dedicated to the Center, you have no Bhavana, faith in life and its divinity. If you have no faith in life and divinity, you have no peace of mind and spirit, and if you have no peace, you have no Sukha, well being, joy of life.

इन्द्रियाणां हि चरतां यन्मनोऽनुविधीयते ।
तदस्य हरति प्रज्ञां वायुर्नावमिवाम्भसि ॥ २-६७॥
Indriyāṇāṃ hi caratāṃ yanmano'nuvidhīyate **/**
Tadasya harati prajñāṃ vāyurnāvamivāmbhasi **//** *2-67* **//**

इंद्रियों के चंचल रहते जिसका मन इंद्रियों के पीछे चलता है, उसकी प्रज्ञा ऐसे हरली जाती है, जैसे वायु, नाव को हर लेती है।

If your senses run after pleasure in the wild, and your mind, ensnared, runs after them, that fascination steals away your wisdom just like a storm of wind overturning your boat in spite of the best of oars and your physical skill and strength.

तस्माद्यस्य महाबाहो निगृहीतानि सर्वशः ।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ २-६८॥
Tasmādyasya mahābāho nigṛhītāni sarvaśaḥ **/**

Indriyāṇīndriyārthebhyastasya prajñā pratiṣṭhitā **//** *2-68* **//**

महाबाहु! जिसकी इंद्रियां विषयों से सब प्रकार हट कर आत्मा के बस मं हैं केवल वही स्थित प्रज्ञ है।

Therefore, O man of mighty arms, he, whose senses and mind are wholly self-controlled, against the temptations of temporary externals, he alone is the man of stable intelligence.

या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी ।
यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः ॥ २-६९॥
Yā niśā sarvabhūtānāṃ tasyāṃ jāgarti saṃyamī **/**
Yasyāṃ jāgrati bhūtāni sā niśā paśyato muneḥ **//** *2-69* **//**

जब सारी दुनिया सोती है तब संयमी जागता है। और जब प्राणी जागते हैं तब संयमी सोता है। क्योंकि उसको भगवान् के दर्शन होते हैं।

And know one thing: such a man is a man of the self, nor is he a man of the crowd. He is his own man complete and full. He can, and does walk alone, against the crowd: Self controlled, he keeps awake when the whole world sleeps in the night's dark. He goes to sleep, as if, in the self when the world is waking, exulting in the externals of the senses, all this way because he sees the reality, he thinks and decides for himself, by himself, free, unfettered, firm, unshaken.

आपूर्यमाणमचलप्रतिष्ठं समुद्रमापः प्रविशन्ति यद्वत् ।
तद्वत्कामा यं प्रविशन्ति सर्वे स शान्तिमाप्नोति न कामकामी ॥ २-७०॥
Āpūryamāṇamacalapratiṣṭhaṃ samudramāpaḥ praviśanti yadvat **/**
Tadvatkāmā yaṃ praviśanti sarve sa śāntimāpnoti na kāmakāmī **//** *2-70* **//**

कान शांति में ह?

जैसे अचल और प्रतिष्ठित समुद्र में सारे संसार की नदियां आ कर समा जाती हैं। ऐसे ही जिसके आत्मा में सांसारिक कामनाएं समा जाती हैं, शांति उसी को मिलती है, काम कामी को नही।।

Who is at peace?

One who is vast and deep as the ocean: Just as small streams, playful, running, jumping, rousing, enter the sea and are lost in the depths of the ocean, so the man who watches around, observes, receives, thinks, and absorbs, remains calm. His spirit rests, rooted in Infinity. All his desires and ambitions enter into the depths of his Being like the streams received and absorbed in the ocean. Not so the man beaten around by the winds of change and desire.

विहाय कामान्यः सर्वान्पुमांश्चरति निःस्पृहः ।
निर्ममो निरहङ्कारः स शान्तिमधिगच्छति ॥ २-७१॥

Vihāya kāmānyaḥ sarvānpumāṃścarati niḥspṛhaḥ **/**
Nirmamo nirahaṅkāraḥ sa śāntimadhigacchati **//** *2-71* **//**

कामनाएं छोड़ो:

जो सारी कामनाओं को छोड़कर निश्चिंत घूमता है, जो निर्मम है, निरहंकार है, वही शान्ति प्राप्त करता है।

Give up Kama:
Having crossed over all desires, having nothing to regret, the man who lives free from selfishness and pride of the self, that man is at peace.

एषा ब्राह्मी स्थितिः पार्थ नैनां प्राप्य विमुह्यति ।
स्थित्वास्यामन्तकालेऽपि ब्रह्मनिर्वाणमृच्छति ॥ २-७२॥
Eṣā brāhmī sthitiḥ pārtha naināṃ prāpya vimuhyati **/**
Sthitvāsyāmantakāle'pi brahmanirvāṇamṛcchati **//** *2-72* **//**

पार्थ! यह ब्राह्मी स्थिति है। इसे पाकर मनुष्य मोह में नहीं फंसता। इसको प्राप्त कर मनुष्य अंत काल में भी निर्वाण को प्राप्त कर लेता है।

That is the Brahmi State, the spiritual state of divinity in the state of humanity. Having attained to that state, no one is destabilised even for the selfish love of the nearest and dearest ones, not even by the fear of death. Having been established in this state, when he breathes his last, he rests in the freedom of Infinity of peace and joy.

CHAPTER-3

अर्जुन उवाच ।
ज्यायसी चेत्कर्मणस्ते मता बुद्धिर्जनार्दन ।
तत्किं कर्मणि घोरे मां नियोजयसि केशव ॥ ३-१॥

Arjuna uvāca **/**
Jyāyasī cetkarmaṇaste matā buddhirjanārdana **/**
Tatkiṃ karmaṇi ghore māṃ niyojayasi keśava **//** *3-1* **//**

अर्जुन बोले:

हे जनार्दन, यदि आप कर्म से बुद्धि को श्रेष्ठ मानते हं तो, हे केशव, मुझे आप इस घोर युद्ध कर्म में क्यों लगाना चाहते हैं।

Says Arjuna:

O Janardana, if you hold (believe) that the state of knowledge born of clairvoyant reason is superior to Karma, then why do you, Keshava, want me to engage in this bloody act of war.

व्यामिश्रेणेव वाक्येन बुद्धिं मोहयसीव मे ।
तदेकं वद निश्चित्य येन श्रेयोऽहमाप्नुयाम् ॥ ३-२॥

Vyāmiśreṇeva vākyena buddhiṃ mohayasīva me **/**
Tadekaṃ vada niścitya yena śreyo'hamāpnuyām **//** *3-2* **//**

मुझे लगता है इन मिले-जुले शब्दों से आप मेरी बुद्धि को भ्रमित कर रहे हैं। आप मुझे निश्चित शब्दों में बतलाइए कि मेरे लिए क्या श्रेष्ठ है, बुद्धि या कर्म।

It appears to me as if you are confusing my understanding with ambiguous words. Therefore please speak to me in clear and definite words so that I may attain to and do what is really good for me.

श्रीभगवानुवाच ।
लोकेऽस्मिन् द्विविधा निष्ठा पुरा प्रोक्ता मयानघ ।
ज्ञानयोगेन साङ्ख्यानां कर्मयोगेन योगिनाम् ॥ ३-३॥

Śrībhagavānuvāca **/**
Loke'smin dvividhā niṣṭhā purā proktā mayānagha **/**
Jñānayogena sāṅkhyānāṃ karmayogena yoginām **//** *3-3* **//**

श्रीमद्भागवन् बोले:

हे निष्पाप अर्जुन, लोक में निष्ठा दो प्रकार की है लेकिन बात एक ही है। यदि आप सांख्य वादी हैं तो बुद्धि श्रेष्ठ है, यदि आप कर्मयोगी हैं तो कर्म श्रेष्ठ है।

Says Shri Bhagawan:
Hey sinless pure soul (atma), earlier I have spoken of two ways of definitive Dharma for holy living: jnana yoga for the sankhyas, and karma yoga for the Karma yogis.

न कर्मणामनारम्भान्नैष्कर्म्यं पुरुषोऽश्नुते ।
न च संन्यसनादेव सिद्धिं समधिगच्छति ॥ ३-४॥

Na karmaṇāmanārambhānnaiṣkarmyaṃ puruṣo'śnute **/**
Na ca saṃnyasanādeva siddhiṃ samadhigacchati **//** *3-4* **//**

यदि आप कर्म नहीं करते तो निष्काम भाव को प्राप्त नहीं कर सकते, और न कर्म के बिना सांख्य सिद्धि को प्राप्त कर सकते हैं। कर्म तो करना ही पड़ेगा।

Man does not attain to the state of freedom from karma i.e., freedom from bondage, without engaging into karma, nor does he attain to Siddhi (success) by ceasing to act.

न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत् ।
कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः ॥ ३-५॥

Na hi kaścitkṣaṇamapi jātu tiṣṭhatyakarmakṛt **/**
Kāryate hyavaśaḥ karma sarvaḥ prakṛtijairguṇaiḥ **//** *3-5* **//**

कर्म न करने वाला भी कर्म के बिना एक क्षण भी नहीं रह सकता। कर्म करना प्रकृति का धर्म है। चाहे या न चाहे, प्रकृति के कारण कर्म तो करना ही पड़ेगा।

Nor does man stay even for a moment without doing some karma. By sheer force of Nature and its dynamics, man is forced to engage in karma.

कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन् ।
इन्द्रियार्थान्विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते ॥ ३-६॥

Karmendriyāṇi saṃyamya ya āste manasā smaran **/**
Indriyārthānvimūḍhātmā mithyācāraḥ sa ucyate **//** *3-6* **//**

जो कहता है कि मैं कर्मेंद्रियों को संयम करके कोई कर्म नहीं करता वह मिथ्याचारी है क्योंकि वह मन से तो सोचता है, अर्थात वह मन से कर्म करता है, कर्मेंद्रियों से नहीं।

And if man suppresses his karmendriyas, but mentally engages in the objects of desire for sukha, then the simple foolish man is called a pretender.

यस्त्विन्द्रियाणि मनसा नियम्यारभतेऽर्जुन ।
कर्मेन्द्रियैः कर्मयोगमसक्तः स विशिष्यते ॥ ३-७॥

Yastvindriyāṇi manasā niyamyārabhate'rjuna **/**
Karmendriyaiḥ karmayogamasaktaḥ sa viśiṣyate **//** *3-7* **//**

हे अर्जुन, जो मनुष्य मन से कर्मेंद्रियों को वश करके कर्म करता है, वह विशेष है, क्योंकि वह असक्त और कर्मयोगी है।

But, hey Arjuna, if man controls his mind and senses, and then, without any selfish motive, engages in karma with karmendriyas, such a person is special and exceptional over the generality.

नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः ।
शरीरयात्रापि च ते न प्रसिद्ध्येदकर्मणः ॥ ३-८॥
Niyataṃ kuru karma tvaṃ karma jyāyo hyakarmaṇaḥ **/**
Śarīrayātrāpi ca te na prasiddhyedakarmaṇaḥ **//** *3-8* **//**

तुम नियत कर्म करो। कर्म करने वाला कर्महीन से बड़ा है। तेरी शरीर यात्रा भी बिना कर्म के पूरी नहीं होगी।

Do karma as prescribed by Dharma Shastras. Karma is superior to non-karma, (doing is higher than non-doing). Even your life at the physical stage will not be possible without karma.

यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः ।
तदर्थं कर्म कौन्तेय मुक्तसङ्गः समाचर ॥ ३-९॥
Yajñārthātkarmaṇo'nyatra loko'yaṃ karmabandhanaḥ **/**
Tadarthaṃ karma kaunteya muktasaṅgaḥ samācara **//** *3-9* **//**

हे कुंती पुत्र, कर्म करो, यज्ञार्थ कर्म करो। यज्ञार्थ के बिना जो कर्म किया जाता है, वह बंधन का कारण होता है। इसलिए कर्म करो, संगमुक्त होकर करो। यज्ञार्थ करो।

Karma, other than when it is done for the sake of yajna, is the cause of bondage for man in this world. Therefore, O Kaunteya, you do karma for the sake of yajna without involvement of the personal self.

सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः ।
अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोऽस्त्विष्टकामधुक् ॥ ३-१०॥
Sahayajñāḥ prajāḥ sṛṣṭvā purovāca prajāpatiḥ **/**
Anena prasaviṣyadhvameṣa vo'stviṣṭakāmadhuk **//** *3-10* **//**

जब भगवान् प्रजापति ने मानवकी सृष्टि की थी तो यज्ञ के साथ की थी। और भगवान् ने कहा था, यज्ञ के साथ आगे बढ़ो, यह यज्ञ तुम्हाहरी सब मनोकामना पूरी करेगा।

Having created the forms of life upto man, by yajna and with yajna, Prajapati earlier said to man: "Go and increase and advance by yajna, and may yajna give you the fulfillment of all your holy mission (ambition)."

देवान्भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः ।
परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ ॥ ३-११॥
Devānbhāvayatānena te devā bhāvayantu vaḥ **/**
Parasparaṃ bhāvayantaḥ śreyaḥ paramavāpsyatha **//** *3-11* **//**

यज्ञ से देवों की सेवा करो। देव तुम्हें उन्नति प्रदान करेंगे। परस्पर सेवा और उन्नति करते हुए तुम सब श्रेयस की प्राप्ति करोगे ।

You serve the Devas by yajna, and the Devas will fulfil your mission. In this way, mutually advancing each other, you will reach the highest state in life.

इष्टान्भोगान्हि वो देवा दास्यन्ते यज्ञभाविताः ।
तैर्दत्तानप्रदायैभ्यो यो भुङ्क्ते स्तेन एव सः ॥ ३-१२॥
Iṣṭānbhogānhi vo devā dāsyante yajñabhāvitāḥ **/**
Tairdattānapradāyaibhyo yo bhuṅkte stena eva saḥ **//** *3-12* **//**

यज्ञ से देव तुम्हें इष्टभोग प्रदान करेंगे। जो भी यज्ञार्थ देवसेवा के बिना भोजन करता है, वह वास्तव में चोर है।

The Devas served through yajna, will give you the desired fruits of life. Given as thus by the Devas, if man consumes and enjoys anything without giving through yajna for the Devas, he would be only a thief, misappropriating the divine gifts for selfish purposes.

यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः ।
भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात् ॥ ३-१३॥
Yajñaśiṣṭāśinaḥ santo mucyante sarvakilbiṣaiḥ **/**
Bhuñjate te tvaghaṃ pāpā ye pacantyātmakāraṇāt **//** *3-13* **//**

यज्ञशेष का सेवन करने वाले सब पापकर्म से बच जाते हैं। जो लोग केवल अपने लिए भोजन बनाते हैं और केवल स्वयं खाते हैं वे वास्तव में पाप का भोजन करते हैं।

Men who are living on the gifts of yajna, get free from all sins. They eat but only sin who cook and eat only for themselves.

अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः ।
यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः ॥ ३-१४॥

Annādbhavanti bhūtāni parjanyādannasambhavaḥ **/**
Yajñādbhavati parjanyo yajñaḥ karmasamudbhavaḥ **//** *3-14* **//**

अन्न से प्राणियों को जीवन मिलता है। वर्षा से अन्न को जीवन मिलता है। यज्ञ से वर्षा होती है और यज्ञ, कर्म से होता है।

From food are born the forms of life, from rain is born the food, from Yajna is born the rain, and yajna is born of karma.

कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि ब्रह्माक्षरसमुद्भवम् ।
तस्मात्सर्वगतं ब्रह्म नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम् ॥ ३-१५॥
Karma brahmodbhavaṃ viddhi brahmākṣarasamudbhavam **/**
Tasmātsarvagataṃ brahma nityaṃ yajñe pratiṣṭhitam **//** *3-15* **//**

कर्म वेद से होता है। वेद अक्षरब्रह्म से हुआ है। और अक्षर ब्रह्म सदा यज्ञ में प्रतिष्ठित हैं।

Karma is born of Brahma, Veda, and Brahma (Veda) is born of Akshara, Eternal Lord. For that reason the universal Brahma is firmly existent and established in yajna for all time.

एवं प्रवर्तितं चक्रं नानुवर्तयतीह यः ।
अघायुरिन्द्रियारामो मोघं पार्थ स जीवति ॥ ३-१६॥
Evaṃ pravartitaṃ cakraṃ nānuvartayatīha yaḥ **/**
Aghāyurindriyārāmo moghaṃ pārtha sa jīvati **//** *3-16* **//**

इस प्रकार प्रवृत्त सृष्टि चक्र में जो भाग नहीं लेता और यज्ञ नहीं करता है, हे पार्थ, उसका जीवन बेकार है।

Therefore, one who does not join and follow this cycle of yajnic existence is a sinner all through life, a wastour who lives in vain, lost in the mere maze of mind and sense.

यस्त्वात्मरतिरेव स्यादात्मतृप्तश्च मानवः ।
आत्मन्येव च सन्तुष्टस्तस्य कार्यं न विद्यते ॥ ३-१७॥
Yastvātmaratireva syādātmatṛptaśca mānavaḥ **/**
Ātmanyeva ca santuṣṭastasya kāryaṃ na vidyate **//** *3-17* **//**

जो मनुष्य आत्मा में ही प्रसन्न है, आत्मा में ही तृप्त है, संतुष्ट है, उसके लिए कोई कार्य की आवश्यकता नहीं है। वह कर्म करता हुआ भी अकर्ता ही है।

Therefore, whoever is pleased with the life of the atman, self-satisfied, self-fulfilled, and happy within the atman, for such a man there is nothing more to do. He is free.

नैव तस्य कृतेनार्थो नाकृतेनेह कश्चन ।
न चास्य सर्वभूतेषु कश्चिदर्थव्यपाश्रयः ॥ ३-१८॥
Naiva tasya kṛtenārtho nākṛteneha kaścana **/**
Na cāsya sarvabhūteṣu kaścidarthavyapāśrayaḥ **//** *3-18* **//**

ऐसे व्यक्ति के लिए कोई कर्म करना या न करना सब बराबर हैं, उसे कोई आवश्यकता नहीं। न उसका किसी प्रकार से कोई अर्थ विशेष ही होता है।

For him, doing as such has no value, nor has non-doing any value, because he has transcended both through self-realization. And he has no further ado with the other beings for anything with expectation only for himself.

तस्मादसक्तः सततं कार्यं कर्म समाचर ।
असक्तो ह्याचरन्कर्म परमाप्नोति पूरुषः ॥ ३-१९॥
Tasmādasaktaḥ satataṃ kāryaṃ karma samācara **/**
Asakto hyācarankarma paramāpnoti pūruṣaḥ **//** *3-19* **//**

इसलिए सदा असक्ति पूर्वक अपना कर्म करते रहो, असक्ति से कर्म करने वाला पुरुष, परम पुरुष की प्राप्ति कर लेता है।

For that reason, keep doing the karma which you have to do without personal attachment. The person doing his duty without personal attachment achieves the highest end of life.

कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः ।
लोकसङ्ग्रहमेवापि सम्पश्यन्कर्तुमर्हसि ॥ ३-२०॥
Karmaṇaiva hi saṃsiddhimāsthitā janakādayaḥ **/**
Lokasaṅgrahamevāpi sampaśyankartumarhasi **//** *3-20* **//**

कर्म से ही जनकादि सब सिद्धि को प्राप्त हुए थे। लोक संग्रह के लिए भी देखो तो तुमको कर्म करने की आवश्यकता है।

By unattached karma only, dedicated Siddha purushas such as Janaka and others got to the state of high attainment. And you too, looking up to social good and social duty, ought to do your duty for the sake of society.

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः ।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ॥ ३-२१॥
Yadyadācarati śreṣṭhastattadevetaro janaḥ **/**
Sa yatpramāṇaṃ kurute lokastadanuvartate **//** *3-21* **//**

श्रेष्ठ पुरुष जो कर्म करता है साधारण पुरुष वैसा ही कर्म करने लगते हैं, क्योंकि श्रेष्ठ पुरुष जो करता है वह साधारण पुरुषों के लिये प्रमाण हो जाता है।

Whatever way the best of men act in society, the other ordinary people follow the same way. Whatever the best person sets as the standard, people generally follow the same way.

न मे पार्थास्ति कर्तव्यं त्रिषु लोकेषु किञ्चन ।
नानवाप्तमवाप्तव्यं वर्त एव च कर्मणि ॥ ३-२२॥
Na me pārthāsti kartavyaṃ triṣu lokeṣu kiñcana **/**
Nānavāptamavāptavyaṃ varta eva ca karmaṇi **//** *3-22* **//**

पार्थ, मेरे लिए कोई कर्तव्य नहीं है तीन लोक में, न मुझे किसी अनाप्त वस्तु की प्राप्ति की आवश्यकता है, फिर भी मैं कर्म करता हूं।

And Partha, look at me: There is nothing for me to do in the world. There is nothing for me to get (because there is nothing that I lack and need). But still I do my duty and keep on doing.

यदि ह्यहं न वर्तेयं जातु कर्मण्यतन्द्रितः ।
मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः ॥ ३-२३॥
Yadi hyahaṃ na varteyaṃ jātu karmaṇyatandritaḥ **/**
Mama vartmānuvartante manuṣyāḥ pārtha sarvaśaḥ **//** *3-23* **//**

यदि मैं सावधान होकर कर्म न करूं तो कोई भी कर्म न कर क्योंकि मैं जिस रास्ते चलता हूँ जनसाधारण उसी रास्ते पर चलते हैं।

All people follow my way, every way and always. If I were not to work the way I do steadily without any personal interest, they won't, if I don't.

उत्सीदेयुरिमे लोका न कुर्यां कर्म चेदहम् ।
सङ्करस्य च कर्ता स्यामुपहन्यामिमाः प्रजाः ॥ ३-२४॥
Utsīdeyurime lokā na kuryāṃ karma cedaham **/**
Saṅkarasya ca kartā syāmupahanyāmimāḥ prajāḥ **//** *3-24* **//**

यदि मैं कर्म न करूं तो यह सारे लोक बिखर जाएंगे और मैं कर्महीन होकर इन सब प्रजाओं के नाश का कारण बन जाऊंगा।

If I do not do my work the way I do, this world would be disturbed and fall to ruin. That way I would be guilty of remiss and cause the ruin of all these people.

सक्ताः कर्मण्यविद्वांसो यथा कुर्वन्ति भारत ।

कुर्याद्विद्वांस्तथासक्तश्चिकीर्षुर्लोकसङ्ग्रहम् ॥ ३-२५॥
Saktāḥ karmaṇyavidvāṃso yathā kurvanti bhārata **/**
Kuryādvidvāṃstathāsaktaścikīrṣurlokasaṅgraham **//** *3-25* **//**

साधारण अविद्वान पुरुष जसे आसक्त होकर कर्म करते हैं वैसे ही विद्वान पुरुष को अनासक्त होकर लोक संग्रह के लिए कर्म करने चाहिए।

As the ignorant people engage in karma with the sense of attachment, the same way and to the same extent, the man of knowledge should do his work but without attachment.

न बुद्धिभेदं जनयेदज्ञानां कर्मसङ्गिनाम् ।
जोषयेत्सर्वकर्माणि विद्वान्युक्तः समाचरन् ॥ ३-२६॥
Na buddhibhedaṃ janayedajñānāṃ karmasaṅginām **/**
Joṣayetsarvakarmāṇi vidvānyuktaḥ samācaran **//** *3-26* **//**

जसे साधारण अविद्वान पुरुष कर्म करते हैं उनको कर दें, उनकी बुद्धि को विद्वान पुरुष विचलित न करें। स्वयम् भगवद्भक्ति में लीन होकर कर्म अवश्य करते रहें।

No wise man should create any confusion in the mind of the ignorant people who are dedicated to karma in their own self-attached way. Instead, the man of knowledge, dedicated to action, should continue to engage in action as duty in the right way.

प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि सर्वशः ।
अहङ्कारविमूढात्मा कर्ताहमिति मन्यते ॥ ३-२७॥
Prakṛteḥ kriyamāṇāni guṇaiḥ karmāṇi sarvaśaḥ **/**
Ahaṅkāravimūḍhātmā kartāhamiti manyate **//** *3-27* **//**

प्रकृति के गुण सब कर्म करते हैं किन्तु मूर्ख लोग अहंकार वश यह समझते हैं कि कर्म तो मैं कर रहा हूँ।

All actions, in reality, are done always and every way by the modes (gunas) of Prakrti. But the average person, individually blinded by self pride, believes that he is the doer. (In reality) he is not.

तत्त्ववित्तु महाबाहो गुणकर्मविभागयोः ।
गुणा गुणेषु वर्तन्त इति मत्वा न सज्जते ॥ ३-२८॥
Tattvavittu mahābāho guṇakarmavibhāgayoḥ **/**
Guṇā guṇeṣu vartanta iti matvā na sajjate **//** *3-28* **//**

जो विद्वान गुण और कर्म के विभाग को तत्व से जानता है कि गुण प्रकृति के हैं और अपना कर्म कर रहे हें इसलिये यह जानकर गुणों में आसकत नहीं होता।

But the man who knows the essence and reality of Prakrti (nature) and the modes and dynamics of Prakrti, realizes that all dynamics of the world is the play of the modes of Prakrti, and therefore such a person keeps free of the pride of doing. (He acts but within the dynamics).

प्रकृतेर्गुणसम्मूढाः सज्जन्ते गुणकर्मसु ।
तानकृत्स्नविदो मन्दान्कृत्स्नविन्न विचालयेत् ॥ ३-२९॥

Prakṛterguṇasammūḍhāḥ sajjante guṇakarmasu **/**
Tānakṛtsnavido mandānkṛtsnavinna vicālayet **//** *3-29* **//**

प्रकृति के गुणों को जो नहीं जानते वे गुण और कर्म में आसक्त हो जाते हैं उन मंदबुद्धि अविद्वानों को तत्ववित् पूर्ण विद्वान विचलित न करें।

Those who are given up to the modes and dynamics of Prakrti are busy with the gunas and dynamics of Prakrti in action. Still the person who knows the whole truth of Prakrti and it's dynamics should not distract such ignorants from their faith and Karma.

मयि सर्वाणि कर्माणि संन्यस्याध्यात्मचेतसा ।
निराशीर्निर्ममो भूत्वा युध्यस्व विगतज्वरः ॥ ३-३०॥

Mayi sarvāṇi karmāṇi saṃnyasyādhyātmacetasā **/**
Nirāśīrnirmamo bhūtvā yudhyasva vigatajvaraḥ **//** *3-30* **//**

मुझे सब कर्म अर्पण करके चित्त अघ्यात्म आत्मा से, कर्मफल इच्छा मुक्त, निरहंकार होकर, ममता और दु:ख मुक्त, युद्ध कर।

Having surrendered all your karmas to me, with your mind wholly concentrated on the atman, free from hope and expectation and selfish attachment, without any fear or regret, you just fight, no strings whatever.

ये मे मतमिदं नित्यमनुतिष्ठन्ति मानवाः ।
श्रद्धावन्तोऽनसूयन्तो मुच्यन्ते तेऽपि कर्मभिः ॥ ३-३१॥

Ye me matamidaṃ nityamanutiṣṭhanti mānavāḥ **/**
Śraddhāvanto'nasūyanto mucyante te'pi karmabhiḥ **//** *3-31* **//**

जो मेरे इस मत को मानते हैं और इसके अनुसार कर्म करते हैं वे मनुष्य श्रद्धावान दोषमुक्त कर्मों से कर्म-बन्ध से छूट जाते हैं।

Those people who constantly stand by and follow this philosophy of mine with faith without doubt or question, they all get free of their karmas and consequences.

ये त्वेतदभ्यसूयन्तो नानुतिष्ठन्ति मे मतम् ।
सर्वज्ञानविमूढांस्तान्विद्धि नष्टानचेतसः ॥ ३-३२॥
Ye tvetadabhyasūyanto nānutiṣṭhanti me matam **/**
Sarvajñānavimūḍhāṃstānviddhi naṣṭānacetasaḥ **//** *3-32* **//**

जो मनुष्य दोष युक्त होकर मेरे मत के अनुसार कर्म नहीं करते, उनको पूरा अज्ञानी, मूढ और नष्ट चेतस् समझो।

But those who, with doubt and question, or with cavil, do not follow this philosophy of mine, know that such people are totally lost to ignorance of knowledge, their higher awareness of the spirit is dead and gone.

सदृशं चेष्टते स्वस्याः प्रकृतेर्ज्ञानवानपि ।
प्रकृतिं यान्ति भूतानि निग्रहः किं करिष्यति ॥ ३-३३॥
Sadṛśaṃ ceṣṭate svasyāḥ prakṛterjñānavānapi **/**
Prakṛtiṃ yānti bhūtāni nigrahaḥ kiṃ kariṣyati **//** *3-33* **//**

ज्ञानी पुरुष भी अपनी प्रकृति के अनुसार कर्म करता है, सभी पुरुष प्रकृति के अनुसार कर्म करते हैं। निग्रह काम नहीं करता।

Of course, even the man of knowledge thinks and acts according to his own nature (Prakrti), because people do follow their own nature, so what can discipline or repression do against nature?

इन्द्रियस्येन्द्रियस्यार्थे रागद्वेषौ व्यवस्थितौ ।
तयोर्न वशमागच्छेत्तौ ह्यस्य परिपन्थिनौ ॥ ३-३४॥
Indriyasyendriyasyārthe rāgadveṣau vyavasthitau **/**
Tayorna vaśamāgacchettau hyasya paripanthinau **//** *3-34* **//**

इंद्रियों और इंद्रियों के विषयों में राग और द्वेष निहित है। इनके वशमें नहीं आना चाहिए। य मनुष्य को धर्म के रास्ते से भटका देते हैं।

Love for objects of the senses and hate for the opposites is innate with every person. So love and hate are in-built with one's personality and they do lead the person. A person should not fall a prey to them, they lead the spirit astray. (See 11.51 for Prakrity).

श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात् ।
स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः ॥ ३-३५॥

Śreyānsvadharmo viguṇaḥ paradharmātsvanuṣṭhitāt **/**
Svadharme nidhanaṃ śreyaḥ paradharmo bhayāvahaḥ **//** *3-35* **//**

स्वधर्म चाहे विगुण (गुण रहित) हो, पर-धर्म चाहे उसका अनुष्ठान कितना ही अच्छा हो, स्वधर्म ही अच्छा है, स्वधर्म में चाहे मरण हो जाए तो भी स्वधर्म अच्छा है। पर-धर्म भय का कारण है।
One's own Dharma, even if it lacks certain virtues, is better than another's, even though the other's may be done better. It is better to die for one's own Dharma, because the other dharma is alien and fearful.

अर्जुन उवाच ।
अथ केन प्रयुक्तोऽयं पापं चरति पूरुषः ।
अनिच्छन्नपि वार्ष्णेय बलादिव नियोजितः ॥ ३-३६॥
Arjuna uvāca **/**
Atha kena prayukto'yaṃ pāpaṃ carati pūruṣaḥ **/**
Anicchannapi vārṣṇeya balādiva niyojitaḥ **//** *3-36* **//**

अर्जुन बोले:
वार्ष्णेय, क्या कारण है कि मनुष्य पाप करता है, जैसे इच्छा न होने पर भी कोई बलपूर्वक हमें फंसा रहा है?
Says Arjuna:
"Hey Varshneya, what is it that overtakes man and causes him to act sinfully, even though he be unwilling, as if man is forced to sin by an irresistible power?

श्रीभगवानुवाच ।
काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः ।
महाशनो महापाप्मा विद्ध्येनमिह वैरिणम् ॥ ३-३७॥
Śrībhagavānuvāca **/**
Kāma eṣa krodha eṣa rajoguṇasamudbhavaḥ **/**
Mahāśano mahāpāpmā viddhyenamiha vairiṇam **//** *3-37* **//**

कृष्ण भागवान् बोले:
इसका कारण काम है, क्रोध है। इनका उद्गम रजोगुण से होता है। यह मानव बुद्धि को खा जाता है। महा पापी है। इस बैरी को बींधना चाहिए।
Shri Bhagawan says:
It is kama (desire), it is krodha (anger) born of the Rajoguna of Prakrti. It is a mighty devourer, mighty misleader to sin. Know it in this life as the worst enemy.

धूमेनाव्रियते वह्निर्यथादर्शो मलेन च ।

यथोल्बेनावृतो गर्भस्तथा तेनेदमावृतम् ॥ ३-३८॥
Dhūmenāvriyate vahniryathādarśo malena ca **/**
Yatholbenāvṛto garbhastathā tenedamāvṛtam ***// 3-38 //***

जैसे धुएं से अग्नि ढक जाती है, जैसे शीशा मैल से धुंधला हो जाता है, जैसे गर्भ झिल्ली से लिपटा होता है, मन ऐसे रजोगुण से ढक जाता है।

As fire is covered by smoke, as mirror is covered by dust, as the embryo is covered in the womb by the sheath, so is the spirit covered by desire born of Rajoguna.

आवृतं ज्ञानमेतेन ज्ञानिनो नित्यवैरिणा ।
कामरूपेण कौन्तेय दुष्पूरेणानलेन च ॥ ३-३९॥
āvṛtaṃ jñānametena jñānino nityavairiṇā **/**
kāmarūpeṇa kaunteya duṣpūreṇānalena ca ***// 3-39 //***

ऐसे ज्ञानी का ज्ञान भी इस बैरी रजोगुण से ढक जाता है, और यह नित्य है। बौरी है। हे कौन्तेय, जो गुण अग्नि-धुएं का है। या कामरूप है, इसकी भूख पूरी नहीं होती।

By this very enemy of knowledge, for sure, as if by unsatiable fire and desire, O son of Kunti, the knowledge of even the wisest is covered.

इन्द्रियाणि मनो बुद्धिरस्याधिष्ठानमुच्यते ।
एतैर्विमोहयत्येष ज्ञानमावृत्य देहिनम् ॥ ३-४०॥
Indriyāṇi mano buddhirasyādhiṣṭhānamucyate **/**
Etairvimohayatyeṣa jñānamāvṛtya dehinam ***// 3-40 //***

इसका स्थान मन में है, इंद्रियों में है, बुद्धि में भी है, इन्हीं से यह मनुष्यों के ज्ञान को ढक कर उनको विचलित करता है।

The senses, mana (mind) and intelligence are called the seat of this mighty misleader, kama. Having covered the knowledge and awareness of the master of the body, this kama deludes even the knowledgeable and the wise.

तस्मात्त्वमिन्द्रियाण्यादौ नियम्य भरतर्षभ ।
पाप्मानं प्रजहि ह्येनं ज्ञानविज्ञाननाशनम् ॥ ३-४१॥
Tasmāttvamindriyāṇyādau niyamya bharatarṣabha **/**
Pāpmānaṃ prajahi hyenaṃ jñānavijñānanāśanam ***// 3-41 //***

हे वीर, इस प्रकार तुम अपनी इंद्रियों को वश में करके इस ज्ञान विज्ञान को नष्ट करने वाले पापी वैरी को मार डालो।

Therefore, you first, having controlled your senses, O mighty of the Bharatas, eliminate this seat of sin, the destroyer of knowledge and wisdom.

इन्द्रियाणि पराण्याहुरिन्द्रियेभ्यः परं मनः ।
मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तु सः ॥ ३-४२॥
Indriyāṇi parāṇyāhurindriyebhyaḥ paraṃ manaḥ **/**
Manasastu parā buddhiryo buddheḥ paratastu saḥ **//** *3-42* **//**

इंद्रियां शरीर से परे हैं। मन इंद्रियों से परे है, मन से परे बुद्धि है, और बुद्धि से परे तो वही है, अर्थात् आत्मा।

The senses are higher and subtler, they say, than the gross body. Subtler and beyond the senses is the mind (mana). Subtler and finer than the mind is intelligence. And finer and subtler beyond is That, i. e., the spirit (atma).

एवं बुद्धेः परं बुद्ध्वा संस्तभ्यात्मानमात्मना ।
जहि शत्रुं महाबाहो कामरूपं दुरासदम् ॥ ३-४३॥
Evaṃ buddheḥ paraṃ buddhvā saṃstabhyātmānamātmanā **/**
Jahi śatruṃ mahābāho kāmarūpaṃ durāsadam **//** *3-43* **//**

इस प्रकार बुद्धि से सूक्ष्म आत्मा को जानकर मन को आत्मा से वश में करके, हे महाबाहु, इस महाशत्रु को मार डालो।

Thus know the one beyond intelligence, the atma, and having known the atma through the consciousness, eliminate the kama, the desire, the enemy, unquestionable otherwise.

CHAPTER-4

श्रीभगवानुवाच ।
इमं विवस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्ययम् ।
विवस्वान्मनवे प्राह मनुरिक्ष्वाकवेऽब्रवीत् ॥ ४-१॥
Śrībhagavānuvāca **I**
Imaṃ vivasvate yogaṃ proktavānahamavyayam **I**
Vivasvānmanave prāha manurikṣvākave'bravīt **II** *4-1* **II**

श्री भगवान ने कहा:
मैंने बुद्धियोग और कर्मयोग की एकता के विषय में आदिकाल में विवस्वान् मनु को शिक्षा दी थी। मनु ने यही शिक्षा इक्षवाकु को दी।
Shri Bhagawan Says:
I spoke of this imperishable yoga of intelligence and Karma originally to Vivaswan, the Sun. Vivaswan spoke of it to Manu and Manu spoke of it to Ikshwaku.

एवं परम्पराप्राप्तमिमं राजर्षयो विदुः ।
स कालेनेह महता योगो नष्टः परन्तप ॥ ४-२॥
Evaṃ paramparāprāptamimaṃ rājarṣayo viduḥ **I**
Sa kāleneha mahatā yogo naṣṭaḥ parantapa **II** *4-2* **II**

मनु ने यही शिक्षा इक्षवाकु को दी। इस प्रकार यह ज्ञान परंपरा से राजर्षि जानते रहे। हेपरन्तप, काल वीतते बीतते यह महती शिक्षा लुप्त हो गई।
The Rajarshis, ruling lords of vision and knowledge, knew of it in tradition. But by the force of mighty time, O paramtapa, this yoga was forgotten and lost.

स एवायं मया तेऽद्य योगः प्रोक्तः पुरातनः ।
भक्तोऽसि मे सखा चेति रहस्यं ह्येतदुत्तमम् ॥ ४-३॥
Sa evāyaṃ mayā te'dya yogaḥ proktaḥ purātanaḥ **I**
Bhakto'si me sakhā ceti rahasyaṃ hyetaduttamam **II** *4-3* **II**

आज मैंने वही पुरातन योग शिक्षा आज तुमको दी है। तुम मेरे भक्त हो, सखा भी हो। यह शिक्षा एक उत्तम रहस्य है।
The same, this ancient yoga, I have explained to you today. You are my friend and also my devotee. This yoga is a mystery, the best and highest. Hence It is thus for you.

अर्जुन उवाच ।
अपरं भवतो जन्म परं जन्म विवस्वतः ।
कथमेतद्विजानीयां त्वमादौ प्रोक्तवानिति ॥ ४-४॥

Arjuna uvāca **/**
Aparaṃ bhavato janma paraṃ janma vivasvataḥ **/**
Kathametadvijānīyāṃ tvamādau proktavāniti **//** *4-4* **//**

अर्जुन ने पूछा,

आपका जन्म तो अभी हुआ है। विवस्वान का जन्म तो सृष्टि के आदि में हुआ था। तो मैं कैसे मान लूं कि सृष्टि के आदि में यह रहस्यमयी शिक्षा आपने विवस्वान को दी थी1

Arjun asks:
Bhagawan, your janma (birth) is recent, Vivaswan's janma was far beyond (in the beginning of the world). How would I know that you spoke of it in the beginning of the world?

श्रीभगवानुवाच ।
बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन ।
तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परन्तप ॥ ४-५॥

Śrībhagavānuvāca **/**
Bahūni me vyatītāni janmāni tava cārjuna **/**
Tānyahaṃ veda sarvāṇi na tvaṃ vettha parantapa **//** *4-5* **//**

श्री भगवान ने उत्तर दिया:

अर्जुन मेरे और तुम्हारे बहुत जन्म हो चुके हैं। बीते समय में, उन सबको मैं जानता हूँ। हे महातपस्वी, तुम नहीं जानते।

Shri Bhagawan answers:
Many have been my births, by gone, O Paramtapa, and yours too. I know them all, but you do not know of them.

अजोऽपि सन्नव्ययात्मा भूतानामीश्वरोऽपि सन् ।
प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय सम्भवाम्यात्ममायया ॥ ४-६॥

Ajo'pi sannavyayātmā bhūtānāmīśvaro'pi san **/**
Prakṛtiṃ svāmadhiṣṭhāya sambhavāmyātmamāyayā **//** *4-6* **//**

मैं अजन्मा हं, मैं घटता बढ़ता नहीं क्योंकि मैं अव्यय हं और मैं सभी प्राणियों का ईश्वर भी हं। मैं प्रकृति शक्ति का स्वामी हं। मैं प्रकृति शक्ति के माध्यम से अपनी योग माया से बार-बर जन्म लेता हं।

I am unborn, eternal. I am Imperishable. I am also the Lord and Master of all the forms of life. And controlling as Master of my own power, Prakrti, I come into existence again and again, that's how I manifest.

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥ ४-७॥
Yadā yadā hi dharmasya glānirbhavati bhārata **/**
Abhyutthānamadharmasya tadātmānaṃ sṛjāmyaham **//** *4-7* **//**

जब–जब धर्म की हानि होती है और अधर्म बढ़ता है तब–तब मैं स्वयम् आत्म रूप में जन्म लेता हूं।
Whenever the forms of Dharma (righteousness) go down and forces of Adharma (unrighteousness) go up, then I assert myself and create a spirited force to re-establish Dharma over adharma.

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥ ४-८॥
Paritrāṇāya sādhūnāṃ vināśāya ca duṣkṛtām **/**
Dharmasaṃsthāpanārthāya sambhavāmi yuge yuge **//** *4-8* **//**

साधुजनों के पुनरुत्थान के लिए और दुष्कर्म करने वालों के विनाश के लिए एवम् पुनः धर्म की स्थापना के लिए मैं युग युग में जन्म लेता हूं।
For the re-establishment of the good and for uprooting of the evil and evil doers, for the re-establishment of Dharma, I assert myself again and again and manifest myself.

जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः ।
त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन ॥ ४-९॥
Janma karma ca me divyamevaṃ yo vetti tattvataḥ **/**
Tyaktvā dehaṃ punarjanma naiti māmeti so'rjuna **//** *4-9* **//**

ह अर्जुन, मेरे दैवी जन्म और पुनर्जन्म को जो मनुष्य तत्त्वतः (वास्तव में) जानता है, वह देह त्याग कर पुनर्जन्म नहीं लेता। अर्जुन, वह मुझे प्राप्त हो जाता है।
Hey Arjuna, my janma and divine Karma, thus, whosoever knows in the essence, he, having given up this body, is not reborn here, again, but comes to me.

वीतरागभयक्रोधा मन्मया मामुपाश्रिताः ।
बहवो ज्ञानतपसा पूता मद्भावमागताः ॥ ४-१०॥
Vītarāgabhayakrodhā manmayā māmupāśritāḥ **/**
Bahavo jñānatapasā pūtā madbhāvamāgatāḥ **//** *4-10* **//**

जिन का राग, भय और क्रोध समाप्त हो गया है, जो मुझे प्राप्त हो चुके हैं, या मेरी शरण में रहते हैं, जो ज्ञान और तप से पवित्र होकर मुझे भाव रूप में प्राप्त हो चुके हैं।

Many, past all attachments, fear and anger, purified by knowledge and tapas (austerity of discipline), concentrated on me and dependent on me alone, have come to my state of being (Perfection).

ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम् ।
मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः ॥ ४-११॥

Ye yathā māṃ prapadyante tāṃstathaiva bhajāmyaham **/**
Mama vartmānuvartante manuṣyāḥ pārtha sarvaśaḥ **//** *4-11* **//**

जैसे भी वे मुझे प्राप्त होते हैं, मैं वैसे ही उनको स्वीकार करता हूं। हे पार्थ, सब लोग मेरे ही रास्ते पर चलते हैं।

Whoever come to me, whichever way they please, I accept them the same way. Partha, thus people move my way only, whatever way they feel they do, all people, always, whatever they be in entirety.

काङ्क्षन्तः कर्मणां सिद्धिं यजन्त इह देवताः ।
क्षिप्रं हि मानुषे लोके सिद्धिर्भवति कर्मजा ॥ ४-१२॥

Kāṅkṣantaḥ karmaṇāṃ siddhiṃ yajanta iha devatāḥ **/**
Kṣipraṃ hi mānuṣe loke siddhirbhavati karmajā **//** *4-12* **//**

कर्म से सिद्धि करनेवाले भक्त देवताओं का यजन करते हैं, उनके कर्म के कारण ही मनुष्य लोक में उनको कर्म से ही शीघ्र सिद्धि मिल जाती है।

Desirous, doing, and in pursuit of success with Karma, people serve the gods, divine powers, and soon enough, on this existential plane, they achieve their goal through Karma here itself.

चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः ।
तस्य कर्तारमपि मां विद्ध्यकर्तारमव्ययम् ॥ ४-१३॥

Cāturvarṇyaṃ mayā sṛṣṭaṃ guṇakarmavibhāgaśaḥ **/**
Tasya kartāramapi māṃ viddhyakartāramavyayam **//** *4-13* **//**

मैंने गुण और कर्म के अनुसार चारों वर्गों की सृष्टि की है। चारों वर्णों का कर्ता मुझे ही जान। वास्तव में मैं कर्ता तो नहीं हूं, मैं अव्यय एक रस हूं, सृष्टि कर्म तो प्रकृति करती है।

The four classes of people were created by me according to the law of nature, merit and Karma. Of that, take me as the doer, though I am the eternal, imperishable and non-doer (Prakrti, inspired by me, does it all).

न मां कर्माणि लिम्पन्ति न मे कर्मफले स्पृहा ।
इति मां योऽभिजानाति कर्मभिर्न स बध्यते ॥ ४-१४॥
Na māṃ karmāṇi limpanti na me karmaphale spṛhā **/**
Iti māṃ yo'bhijānāti karmabhirna sa badhyate **//** *4-14* **//**

कर्म मुझे बंधन में नहीं डालते। मुझे कर्म करने की इच्छा भी नहीं। मुझे फल की इच्छा भी नहीं। जो मेरे इस व्यक्तित्व को जानता है, वह कर्मबंध में भी फंसता नहीं।

Karmas do not bind me, nor do I have any desire for the result of Karma. So, the man who knows me thus is not bound by Karma.

एवं ज्ञात्वा कृतं कर्म पूर्वैरपि मुमुक्षुभिः ।
कुरु कर्मैव तस्मात्त्वं पूर्वैः पूर्वतरं कृतम् ॥ ४-१५॥
Evaṃ jñātvā kṛtaṃ karma pūrvairapi mumukṣubhiḥ **/**
Kuru karmaiva tasmāttvaṃ pūrvaiḥ pūrvataraṃ kṛtam **//** *4-15* **//**

यह जानकर ही प्राचीनकाल में मुक्तआत्मा पुरुषों ने कर्म किए थे। इसलिए तुम भी अपना कर्म ऐसे ही करो जैसे पूर्ववर्ती मनुष्यों ने कर्म किया था।

Having known thus, karma was done also by the earliest seekers of freedom. Therefore you too do your karma as was done by the earliest doers of the ancients.

किं कर्म किमकर्मेति कवयोऽप्यत्र मोहिताः ।
तत्ते कर्म प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञात्वा मोक्ष्यसेऽशुभात् ॥ ४-१६॥
Kiṃ karma kimakarmeti kavayo'pyatra mohitāḥ **/**
Tatte karma pravakṣyāmi yajjñātvā mokṣyase'śubhāt **//** *4-16* **//**

कर्म क्या है? अकर्म क्या है? इस विषय में विद्वान कर्मकर्ता भी मोहग्रस्त है। इसलिए मैं तुमको कर्म की परिभाषा समझाऊंगा, जिसे जानकर तुम अशुभ फल से बच जाओगे।

What is karma? What is non-karma? Here even the men of vision and wisdom are confused. That for you I will explain. Having known that, you will be free from the negative results of karma.

कर्मणो ह्यपि बोद्धव्यं बोद्धव्यं च विकर्मणः ।
अकर्मणश्च बोद्धव्यं गहना कर्मणो गतिः ॥ ४-१७॥
Karmaṇo hyapi boddhavyaṃ boddhavyaṃ ca vikarmaṇaḥ **/**
Akarmaṇaśca boddhavyaṃ gahanā karmaṇo gatiḥ **//** *4-17* **//**

कर्म क्या है? विकर्म क्या है? अकर्म क्या है? यह सब जानना चाहिए। क्योंकि कर्म की गति बहुत गहरी है।

The nature and character of karma should be known. The nature and character of wrong action too should be known. Also the nature and character of non-action should be known, because the nature and dynamics of karma is deep and mysterious.

कर्मण्यकर्म यः पश्येदकर्मणि च कर्म यः ।
स बुद्धिमान्मनुष्येषु स युक्तः कृत्स्नकर्मकृत् ॥ ४-१८॥
Karmaṇyakarma yaḥ paśyedakarmaṇi ca karma yaḥ **।**
Sa buddhimānmanuṣyeṣu sa yuktaḥ kṛtsnakarmakṛt **॥** *4-18* **॥**

जो कर्म में अकर्म को देखता है और अकर्म में कर्म को देखता है वह मनुष्यों में विद्वान है, वह योग युक्त है, और सब प्रकार से कर्म करने वाला है, अर्थात् वह भगवान् के लिए कर्म करता है।

One who sees and realizes the state of non-action through karma, and sees and realizes the state of action in non-action, that man is wise among men, he is truly concentrated, he is really versatile, all doer.

यस्य सर्वे समारम्भाः कामसङ्कल्पवर्जिताः ।
ज्ञानाग्निदग्धकर्माणं तमाहुः पण्डितं बुधाः ॥ ४-१९॥
Yasya sarve samārambhāḥ kāmasaṅkalpavarjitāḥ **।**
Jñānāgnidagdhakarmāṇaṃ tamāhuḥ paṇḍitaṃ budhāḥ **॥** *4-19* **॥**

जिसके सब कर्म बिना संकल्प के होते हैं। वह कामना भी नहीं करता और उसके सब कर्म ज्ञानग्नि से दग्ध हो जाते हैं। जिसके कर्म ऐसे हैं, उसी को मनुष्य विद्वान पंडित कहते हैं।

He whose actions, one and all, are begun without any selfish desire and intent, is the man of action, because his actions are purified by the fire of knowledge. Men of knowledge call him wise and enlightened.

त्यक्त्वा कर्मफलासङ्गं नित्यतृप्तो निराश्रयः ।
कर्मण्यभिप्रवृत्तोऽपि नैव किञ्चित्करोति सः ॥ ४-२०॥
Tyaktvā karmaphalāsaṅgaṃ nityatṛpto nirāśrayaḥ **।**
Karmaṇyabhipravṛtto'pi naiva kiñcitkaroti saḥ **॥** *4-20* **॥**

वह कर्म फल की इच्छा छोड़कर सदा प्रसन्न रहता है, हार जीत में सदा एकरस रहता है, किसी संसारिक पुरुष का आश्रय नहीं तकता, केवल ईश्वर के सहारे कर्म करता है। ऐसा सदा कर्म करते हुए भी कर्मबन्ध से सदा निर्लिप्त रहता है।

The man who seeks no fruit of the action he does, who is always satisfied with the action only, without any props of expectation for the action, even though he acts,

impersonal, yet he is not affected by any bonds of action, he is free, his action is non-action.

निराशीर्यतचित्तात्मा त्यक्तसर्वपरिग्रहः ।
शारीरं केवलं कर्म कुर्वन्नाप्नोति किल्बिषम् ॥ ४-२१॥
Nirāśīryatacittātmā tyaktasarvaparigrahaḥ **/**
Śārīraṃ kevalaṃ karma kurvannāpnoti kilbiṣam **//** *4-21* **//**

जिसने आशा निराशा सब पर विजय पा ली है, जिसने मन और चित्त को आत्मा के वश कर लिया है, जिसने सारे बंधन तोड़ दिए हैं, जिसका केवल प्राकृतिक शरीर कर्म करता है, उसका आत्मा सदा शुद्ध रहता है उसे कोई पाप या मैल नहीं लगता।
Man with no expectation, with perfect self-control over body and mind, above all desire and gain, who acts only in terms of body, he, though acting thus, doesn't suffer any sin or pollution of the Atma.

यदृच्छालाभसन्तुष्टो द्वन्द्वातीतो विमत्सरः ।
समः सिद्धावसिद्धौ च कृत्वापि न निबध्यते ॥ ४-२२॥
Yadṛcchālābhasantuṣṭo dvandvātīto vimatsaraḥ **/**
Samaḥ siddhāvasiddhau ca kṛtvāpi na nibadhyate **//** *4-22* **//**

जो ईश्वर इच्छा में ही प्रसन्न है, जिसमें कोई दोरंगी चाल नहीं है, जिसमें कोई किसी से ईर्ष्या द्वेष नहीं है। जो सिद्धि और असिद्धि दोनों में एकरस रहता है। वह मनुष्य सब कर्म करते हुए भी, सदा बंधन मुक्त रहता है।
Satisfied, happy with whatever he gets as a matter of the divine course of law, free from internal conflict and self-pride, equanimous with success or no success, even though doing all, he does not suffer any karmic bondage.

गतसङ्गस्य मुक्तस्य ज्ञानावस्थितचेतसः ।
यज्ञायाचरतः कर्म समग्रं प्रविलीयते ॥ ४-२३॥
Gatasaṅgasya muktasya jñānāvasthitacetasaḥ **/**
Yajñāyācarataḥ karma samagraṃ pravilīyate **//** *4-23* **//**

जो मनुष्य संग मुक्त है, क्योंकि सब उसके अपने हैं, जो केवल ज्ञान में ही प्रसन्न रहता है, यज्ञ में कर्म करता है, उसके सब कर्मबंधन मुक्त हैं।
Of the man above all expectation of karmic gain, totally free, mind and body controlled by knowledge, doing but as participating in the cosmic yajna, the entire action is reduced to naught.

ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम् ।

ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना ॥ ४-२४॥
Brahmārpaṇaṃ brahma havirbrahmāgnau brahmaṇā hutam **/**
Brahmaiva tena gantavyaṃ brahmakarmasamādhinā **//** *4-24* **//**

जिसके सब कर्म ब्रह्म को अर्पण हैं। जिसकी सब आहुतियां ब्रह्म के अर्पण हैं। वह ब्रह्म को ही प्राप्त होता है। उसका समस्त कर्म ब्रह्म साधना ही है।

His giving means giving to Brahma, whatever he offers he offers to Brahma, into the fire of Brahma, whatever is offered by him is offered by Brahma. Therefore, his destination is Brahma Itself, because he is one with Brahma Itself in the state of Karmic Samadhi.

दैवमेवापरे यज्ञं योगिनः पर्युपासते ।
ब्रह्माग्नावपरे यज्ञं यज्ञेनैवोपजुह्वति ॥ ४-२५॥
Daivamevāpare yajñaṃ yoginaḥ paryupāsate **/**
Brahmāgnāvapare yajñaṃ yajñenaivopajuhvati **//** *4-25* **//**

कुछ योगी देवताओं को अपनी आहुति अर्पण करते हैं। दूसरे योगी अपनी यज्ञाहुती ब्रह्म को अर्पण करते हैं।

Other yogis offer their karma as yajna to Daiva, divine will as it operates. Still others offer their yajna by yajna into the Fire of Brahma.

श्रोत्रादीनीन्द्रियाण्यन्ये संयमाग्निषु जुह्वति ।
शब्दादीन्विषयानन्य इन्द्रियाग्निषु जुह्वति ॥ ४-२६॥
Śrotrādīnīndriyāṇyanye saṃyamāgniṣu juhvati **/**
Śabdādīnviṣayānanya indriyāgniṣu juhvati **//** *4-26* **//**

कुछ योगी अपनी श्रीत्रादि इंद्रियों को संयम रूपी अग्नि में अर्पण करते हैं। दूसरे योगी अपने शब्द आदि को इंद्रिय रूपी अग्नि में अर्पण करते हैं। ऐसे सब भक्तों की इंद्रियां मानोआत्मा के नियम में नियमित हैं या भगवान् कीर्तन में।

Others offer their senses such as ear, etc., and sense-karma into the fire of discipline. Others offer their senses such as speech into the fire of senses for the sake of senses.

सर्वाणीन्द्रियकर्माणि प्राणकर्माणि चापरे ।
आत्मसंयमयोगाग्नौ जुह्वति ज्ञानदीपिते ॥ ४-२७॥
Sarvāṇīndriyakarmāṇi prāṇakarmāṇi cāpare **/**
Ātmasaṃyamayogāgnau juhvati jñānadīpite **//** *4-27* **//**

सब इंद्रियकर्म करने वाले, या दूसरे साधक जो प्राणकर्म (प्राणायाम) करते हैं, वे सब अपने कर्म को ज्ञान अग्नि में अर्पण करते हैं।

Others offer all indriyas or sense karmas and all prana-karma into fire of spiritual discipline enlightened by the light of knowledge.

द्रव्ययज्ञास्तपोयज्ञा योगयज्ञास्तथापरे ।
स्वाध्यायज्ञानयज्ञाश्च यतयः संशितव्रताः ॥ ४-२८॥
Dravyayajñāstapoyajñā yogayajñāstathāpare **/**
Svādhyāyajñānayajñāśca yatayaḥ saṃśitavratāḥ **//** *4-28* **//**

व्रत में दीक्षित योगी, यती, साधक कई प्रकार के यज्ञ का नियमित अनुष्ठान करते हैं, जैसे द्रव्य-यज्ञ, तपो-यज्ञ, योग-यज्ञ, स्वाध्याय-यज्ञ इत्यादि।

Other men of discipline dedicated to strict vows, offer all dravya yajna with materials, tapas yajnas, yoga yajnas, swadhyaya yajnas, and jnana yajnas, with the discipline of spiritual purity.

अपाने जुह्वति प्राणं प्राणेऽपानं तथापरे ।
प्राणापानगती रुद्ध्वा प्राणायामपरायणाः ॥ ४-२९॥
Apāne juhvati prāṇaṃ prāṇe'pānaṃ tathāpare **/**
Prāṇāpānagatī ruddhvā prāṇāyāmaparāyaṇāḥ **//** *4-29* **//**

प्राण-यज्ञ के साधक प्राण में अपान की आहुति डालते हैं। अथवा अपान में प्राणों की आहुति डालते हैं। कई साधक प्राण और अपान की गाति को रोककर प्राणयाम की साधना करते हैं।

Some persons dedicated to pranayama, having controlled the movement of prana and apana, offer prana into apana and apana into prana,

अपरे नियताहाराः प्राणान्प्राणेषु जुह्वति ।
सर्वेऽप्येते यज्ञविदो यज्ञक्षपितकल्मषाः ॥ ४-३०॥
Apare niyatāhārāḥ prāṇānprāṇeṣu juhvati **/**
Sarve'pyete yajñavido yajñakṣapitakalmaṣāḥ **//** *4-30* **//**

कई साधक अपने भोजन को नियमित करके, प्राण में प्राणों की आहुति डालते हैं। ये सब यज्ञ के विद्वान यज्ञ के द्वारा अपने पापों का निराकरण करते हैं।

Others, having controlled their food intake, offer prana into prana. All these are well versed into the science of yajna and have eliminated their sin and negativity through yajna.

यज्ञशिष्टामृतभुजो यान्ति ब्रह्म सनातनम् ।

नायं लोकोऽस्त्ययज्ञस्य कुतोऽन्यः कुरुसत्तम ॥ ४-३१॥
Yajñaśiṣṭāmṛtabhujo yānti brahma sanātanam **/**
Nāyaṃ loko'styayajñasya kuto'nyaḥ kurusattama **//** *4-31* **//**

यज्ञशेष का भोजन (अमृतपान) करने वाले सनातन ब्रह्म को प्राप्त होते हैं। यज्ञ न करने वाले लोकभ्रष्ट होते हैं, हे कुरूवीर, दूसरा लोक तो उनको मिलेगा कैसे?

Those who sustain themselves on food received as yajna-shesha, attain to Sanatana (Eternal) Brahma. Then those who are indifferent to yajna fail in this life as well. How can they achieve anything more, O best of Kurus?

एवं बहुविधा यज्ञा वितता ब्रह्मणो मुखे ।
कर्मजान्विद्धि तान्सर्वानेवं ज्ञात्वा विमोक्ष्यसे ॥ ४-३२॥
Evaṃ bahuvidhā yajñā vitatā brahmaṇo mukhe **/**
Karmajānviddhi tānsarvānevaṃ jñātvā vimokṣyase **//** *4-32* **//**

इस प्रकार कितने ही यज्ञ हैं जिनका विस्तार वेद में है। वे सब कर्म से किए जाते हैं। उन सबको जानकर और करके तुम कर्मबन्ध से छूट जाओगे।

This way the yajnas are many and manifold into the fire of yajna. All these are described in the words of Veda. All of them are born of Karma. If you know and follow these this way, you will be free of the sense of karmic involvement.

श्रेयान्द्रव्यमयाद्यज्ञाज्ज्ञानयज्ञः परन्तप ।
सर्वं कर्माखिलं पार्थ ज्ञाने परिसमाप्यते ॥ ४-३३॥
Śreyāndravyamayādyajñājjñānayajñaḥ parantapa **/**
Sarvaṃ karmākhilaṃ pārtha jñāne parisamāpyate **//** *4-33* **//**

द्रव्ययज्ञ से ज्ञानयज्ञ श्रेष्ठ है। हे महातपस्वी, क्योंकि सर्वकर्म का अन्त ज्ञान में ही होता है।

O scorcher of the foes, jnana yajna is far superior and higher than material yajnic karma because all karma, O Partha, culminates and ends up in knowledge.

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया ।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः ॥ ४-३४॥
Tadviddhi praṇipātena paripraśnena sevayā **/**
Upadekṣyanti te jñānaṃ jñāninastattvadarśinaḥ **//** *4-34* **//**

नतमस्तक हो कर, प्रश्न करके, सेवा भाव से उस ब्रह्म को जान। तत्वदर्शी ज्ञानी विद्वान जिन्होंने ब्रह्म दर्शन किये हैं, वे तुम्हें ज्ञान देंगे।

Know that with surrender, questioning and commitment. Of this knowledge, they will speak to you who know things in the essence.

यज्ज्ञात्वा न पुनर्मोहमेवं यास्यसि पाण्डव ।
येन भूतान्यशेषेण द्रक्ष्यस्यात्मन्यथो मयि ॥ ४-३५॥
Yajjñātvā na punarmohamevaṃ yāsyasi pāṇḍava **/**
Yena bhūtānyaśeṣeṇa drakṣyasyātmanyatho mayi **//** *4-35* **//**

जिसको जानकर इस प्रकार, हे पांडु पुत्र, तुम फिर से मोह में नहीं फंसोगे, जिसको देख के सब प्राणियों को पहले अपने अंदर और उसके पश्चात् मेरे भीतर देखोगे।

Knowing that, O Pandava, you will not suffer the kind of involvement and attachment you now feel this way. With that knowledge you will know all forms of life in existence as in yourself and in me.

अपि चेदसि पापेभ्यः सर्वेभ्यः पापकृत्तमः ।
सर्वं ज्ञानप्लवेनैव वृजिनं सन्तरिष्यसि ॥ ४-३६॥
Api cedasi pāpebhyaḥ sarvebhyaḥ pāpakṛttamaḥ **/**
Sarvaṃ jñānaplavenaiva vṛjinaṃ santariṣyasi **//** *4-36* **//**

यदि सब प्राणियों में तुम मानो सबसे पापी भी होगे तो भी ज्ञानरूपी नौका से पाप समुद्र से पार हो जाओगे।

And if you are the sinnermost of all the sinners, even then, with that knowledge as the savior boat, you will cross the ocean of sins.

यथैधांसि समिद्धोऽग्निर्भस्मसात्कुरुतेऽर्जुन ।
ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात्कुरुते तथा ॥ ४-३७॥
Yathaidhāṃsi samiddho'gnirbhasmasātkurute'rjuna **/**
Jñānāgniḥ sarvakarmāṇi bhasmasātkurute tathā **//** *4-37* **//**

अर्जुन, जैसे धधकती हुई अग्नि, समिधाओं को भस्मसात कर देती हैं वैसे ही ज्ञानाग्नि, समस्त कर्मों को भस्म कर देती है।

Arjuna, just as blazing fire reduces everything to ash, so does the fire of knowledge reduce all Karmas to naught.

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते ।
तत्स्वयं योगसंसिद्धः कालेनात्मनि विन्दति ॥ ४-३८॥
Na hi jñānena sadṛśaṃ pavitramiha vidyate **/**
Tatsvayaṃ yogasaṃsiddhaḥ kālenātmani vindati **//** *4-38* **//**

ज्ञान के सदृश इस संसार में कुछ भी पवित्र नहीं है। यही योग सिद्ध साधक स्वयम् समय आने पर प्राप्त कर लेता है।

In this world, there is nothing so pure, powerful and sacred as knowledge, and that same, a person established in the yoga of knowledge, realizes by his own self in due course of time.

श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः ।
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति ॥ ४-३९॥
Śraddhāvā~llabhate jñānaṃ tatparaḥ saṃyatendriyaḥ **/**
Jñānaṃ labdhvā parāṃ śāntimacireṇādhigacchati **//** *4-39* **//**

श्रद्धावान् ज्ञान लेने को तैयार, और जितेंद्रिय, ऐसे पुरुष को ज्ञान अवश्यमेव मिलता है और ज्ञानी को मानसिक शांति भी अवश्य तत्काल ही मिल जाती है।

A person of faith and dedication gets knowledge and wisdom, and the dedicated person, having disciplined his mind and senses, having gained knowledge and wisdom, achieves the highest peace without delay.

अज्ञश्चाश्रद्दधानश्च संशयात्मा विनश्यति ।
नायं लोकोऽस्ति न परो न सुखं संशयात्मनः ॥ ४-४०॥
Ajñaścāśraddadhānaśca saṃśayātmā vinaśyati **/**
Nāyaṃ loko'sti na paro na sukhaṃ saṃśayātmanaḥ **//** *4-40* **//**

बिना ज्ञान, बिना श्रद्धा, संशयशील, ऐसे पुरुष को शांति नहीं मिल सकती। न इस लोक में, न परलोक में, शांति और सुख नहीं मिल सकता।

The man of doubt at heart, without knowledge and faith, suffers only self-destruction. For a person of doubt, there is no peace, no happiness, here in this world, nor later in the other.

योगसंन्यस्तकर्माणं ज्ञानसञ्छिन्नसंशयम् ।
आत्मवन्तं न कर्माणि निबध्नन्ति धनञ्जय ॥ ४-४१॥
Yogasaṃnyastakarmāṇaṃ jñānasañchinnasaṃśayam **/**
Ātmavantaṃ na karmāṇi nibadhnanti dhanañjaya **//** *4-41* **//**

जो योगी है, जिसे फल की इच्छा छोड़कर कर्म करना है, जिसके मन के सारे संशय ज्ञानअग्नि में भस्म हो चुके हैं। जो मात्र श्रद्धावान् और कर्मवान् है उसको कर्मबन्ध, हे धनन्जय, नहीं हो सकता।

Hey Dhananjaya, Karmas do not bind a person who, through yoga discipline, has given up the desire for the fruits of Karma, who, through knowledge and wisdom, has risen above all doubts, and who is firmly established in faith and dedication to yajnic

service to God and existence, and who looks up to his atma and Paramatma for guidance far above the fluctuations of the mind.

तस्मादज्ञानसम्भूतं हृत्स्थं ज्ञानासिनात्मनः ।
छित्त्वैनं संशयं योगमातिष्ठोत्तिष्ठ भारत ॥ ४-४२॥
Tasmādajñānasambhūtaṃ hṛtsthaṃ jñānāsinātmanaḥ **/**
Chittvainaṃ saṃśayaṃ yogamātiṣṭhottiṣṭha bhārata **//** *4-42* **//**

हे भरत वंशी, अज्ञान के कारण, तुम्हारे मन में जो संशय घर कर गया है, इस संशय को ज्ञानरूपी तलवार से काट डालो और कर्म योग के सहारे युद्ध के लिए तैयार होकर खड़े हो जाओ।

Arise, O Bharata, therefore, dedicate yourself to Karma-yoga, eliminate all doubts, and cleanse yourself, with knowledge, of all the ignorance that pollutes your mind and heart and arrests you from action.

CHAPTER-5
(कर्म सन्यास योग)

अर्जुन उवाच ।
संन्यासं कर्मणां कृष्ण पुनर्योगं च शंससि ।
यच्छ्रेय एतयोरेकं तन्मे ब्रूहि सुनिश्चितम् ॥ ५-१॥
Arjuna uvāca **/**
Saṃnyāsaṃ karmaṇāṃ kṛṣṇa punaryogaṃ ca śaṃsasi **/**
Yacchreya etayorekaṃ tanme brūhi suniścitam **//** *5-1* **//**

अर्जुन बोलेः

कृष्ण, आप कर्म सन्यास की बात कर रहे हैं, और साथ में कर्म योग की बात भी करते है, मुझसे तो जो श्रेष्ठ है, केवल उसकी निश्चित बात करो।

Says Arjuna:
Hey Krishna, you first recommend karma-sanyasa, and again prescribe karma-yoga. Which one of these is better; speak of that to me for sure.

श्रीभगवानुवाच ।
संन्यासः कर्मयोगश्च निःश्रेयसकरावुभौ ।
तयोस्तु कर्मसंन्यासात्कर्मयोगो विशिष्यते ॥ ५-२॥
Śrībhagavānuvāca **/**
Saṃnyāsaḥ karmayogaśca niḥśreyasakarāvubhau **/**
Tayostu karmasaṃnyāsāt karmayogo viśiṣyate **//** *5-2* **//**

श्री भगवान् बोलेः

अर्जुन, कर्म-सन्यास आर कर्म-योग दोनों ही श्रेष्ठ हैं, किंतु यदि दोनों को साथ-साथ देखें तो कर्म सन्यास से कर्म-योग विशेष हैं।

Says Shree Bhagawan:
Karma Sanyasa and karma yoga both are good, they give you freedom from bondage. Still, of both, karma yoga is better and superior to karma sanyasa.

ज्ञेयः स नित्यसंन्यासी यो न द्वेष्टि न काङ्क्षति ।
निर्द्वन्द्वो हि महाबाहो सुखं बन्धात्प्रमुच्यते ॥ ५-३॥
Jñeyaḥ sa nityasaṃnyāsī yo na dveṣṭi na kāṅkṣati **/**
Nirdvandvo hi mahābāho sukhaṃ bandhātpramucyate **//** *5-3* **//**

महाबाहु, जो कर्मयोगी न किसी से द्वेष करता, न किसी से मोह करता, वह वास्तव में कर्म-सन्यासी ही है। ऐसा कर्म-योगी निर्द्वन्द्व होकर आसानी से कर्म-बन्ध से छूट जाता है।

The person who neither hates anybody nor desires (loves) for selfish reasons, who is free from the disorder of duality, is to be taken as ever a sanyasi, because, O hero of strong arm, he gets easily free from the bondage of Karma.

साङ्ख्ययोगौ पृथग्बालाः प्रवदन्ति न पण्डिताः ।
एकमप्यास्थितः सम्यगुभयोर्विन्दते फलम् ॥ ५-४॥
Sāṅkhyayogau pṛthagbālāḥ pravadanti na paṇḍitāḥ **/**
Ekamapyāsthitaḥ samyagubhayorvindate phalam **//** *5-4* **//**

साधारण लोग कर्म-सन्यासी को और कर्म-योगी को अलग-अलग समझते हैं। विद्वान ऐसा नहीं समझते, क्योंकि कर्म-योग और कर्म-सन्यास में एक का भी जो अनुसरण करता ह, वह दोनों का लाभ उठा लेता है।

Ignorant people, not the learned ones, speak of karma-sanyasa and karma-yoga as different (but that is not correct), because a person, though dedicated and pursuing only one, attains to the fruits of both.

यत्साङ्ख्यैः प्राप्यते स्थानं तद्योगैरपि गम्यते ।
एकं साङ्ख्यं च योगं च यः पश्यति स पश्यति ॥ ५-५॥
Yatsāṅkhyaiḥ prāpyate sthānaṃ tadyogairapi gamyate **/**
Ekaṃ sāṅkhyaṃ ca yogaṃ ca yaḥ paśyati sa paśyati **//** *5-5* **//**

जो स्थान मनुष्य कर्म-सन्यास से प्राप्त करता है, वही स्थान कर्मयोगी भी पा लेता है। अतः सांख्य (कर्म-सन्यास) और योग (कर्म-योग) को जो व्यक्ति एक समझता है, वही वास्तव में ठीक समझता है।

The place and position which is attained by the Sankhyas (who believe in karma sanyasa), the same is also attained by karma yogis. The person who sees Sankhya and Yoga (both karma sanyasa and karma yoga) as one and the same sees in reality the truth of both.

संन्यासस्तु महाबाहो दुःखमाप्तुमयोगतः ।
योगयुक्तो मुनिर्ब्रह्म नचिरेणाधिगच्छति ॥ ५-६॥
Saṃnyāsastu mahābāho duḥkhamāptumayogataḥ **/**
Yogayukto munirbrahma nacireṇādhigacchati **//** *5-6* **//**

महाबाहो, जो कर्म-योगी नहीं है, उसके लिए कर्म-सन्यास अपेक्षितः कठिन है। कर्म-योगी मुनि शीघ्र ही ब्रह्म प्राप्ति कर लेता है।

O hero of strong arm, karma sanyasa, however, is difficult to attain by one who is not a karma yogi, because a person of thought, dedicated to karma yoga, attains to the Brahma state without much delay.

योगयुक्तो विशुद्धात्मा विजितात्मा जितेन्द्रियः ।
सर्वभूतात्मभूतात्मा कुर्वन्नपि न लिप्यते ॥ ५-७॥
Yogayukto viśuddhātmā vijitātmā jitendriyaḥ **/**
Sarvabhūtātmabhūtātmā kurvannapi na lipyate **//** *5-7* **//**

जो कर्म-योगी है, जिसका आत्मा शुद्ध है, जिसका मन और इंद्रियां वश में हैं, जिसका आत्मा परमात्मा के साथ एक है, वह कर्म करते हुए भी कर्म-बन्ध से मुक्त है।

The person dedicated to karma yoga, whose atma is pure of all personal attachments, who has controlled his mind and senses and his atma too, who holds that the Universal Paramatma is at the core of his individual atma, he doesn't get bonded, because even though doing, he is doing everything as his duty.

नैव किञ्चित्करोमीति युक्तो मन्येत तत्त्ववित् ।
पश्यञ्शृण्वन्स्पृशञ्जिघ्रन्नश्नन्गच्छन्स्वपञ्श्वसन् ॥ ५-८॥
Naiva kiñcitkaromīti yukto manyeta tattvavit **/**
Paśyañśṛṇvanspṛśañjighrannaśnangacchansvapañśvasan **//** *5-8* **//**

जो कर्म-योगी कर्म करता हुआ भी यह समझ लेता है कि मैं कुछ नहीं करता, जो होता है सो प्रकृति करती ह, वह सृष्टि के तत्व को जानता है। ऐसा व्यक्ति, देखता हुआ, सुनता हुआ, छूता हुआ, संघता हुआ, खाता हुआ, चलता हुआ, सोता हुआ, सांस लेता हुआ।

The person who knows the ultimate reality of life, who is dedicated to that reality in action, who holds that he does not do anything because, ultimately, it is that Supreme Reality and the Universal Law that does everything that happens, such a person, even though he sees, hears, touches, smells, eats, moves, sleeps and breathes, he remains free from bondage.

प्रलपन्विसृजन्गृह्णन्नुन्मिषन्निमिषन्नपि ।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेषु वर्तन्त इति धारयन् ॥ ५-९॥
Pralapanvisṛjangṛhṇannunmiṣannimiṣannapi **/**
Indriyāṇīndriyārtheṣu vartanta iti dhārayan **//** *5-9* **//**

बोलता हुआ, जागता हुआ, ग्रहण करता हुआ, आंख खोलता मंदता हुआ, यह समझता हुआ कि इंद्रियां अपना काम कर रही हैं....

Such a person, even though he is speaking, eliminating, receiving, winking, doing all this, yet he holds that it is the senses busy with their objects (and not he or she as the atma, and dedicates everything to Brahma Supreme).

ब्रह्मण्याधाय कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा करोति यः ।
लिप्यते न स पापेन पद्मपत्रमिवाम्भसा ॥ ५-१०॥
Brahmaṇyādhāya karmāṇi saṅgaṃ tyaktvā karoti yaḥ **/**
Lipyate na sa pāpena padmapatramivāmbhasā **//** *5-10* **//**

सब कर्म ब्रह्म को अर्पण करके संग को छोड़कर कर्म-बन्ध से इस तरह मुक्त हो जैसे कमल पत्र जल में मुक्त होता है। वह पाप से छूट जाता है।

Dedicating everything to Brahma (Supreme), having given up all personal involvement, doing everything for the Supreme, this person does not get polluted by bondage, the same way as a lotus leaf is not affected by water wherein it grows.

कायेन मनसा बुद्ध्या केवलैरिन्द्रियैरपि ।
योगिनः कर्म कुर्वन्ति सङ्गं त्यक्त्वात्मशुद्धये ॥ ५-११॥
Kāyena manasā buddhyā kevalairindriyairapi **/**
Yoginaḥ karma kurvanti saṅgaṃ tyaktvātmaśuddhaye **//** *5-11* **//**

शरीर से, मन से, बुद्धि से, केवल इंद्रियों से, योगी कर्म करते हैं, संग छोड़कर और ब्रह्म को अर्पण करके वे ऐसा आत्मशुद्धि के लिए करते हैं, कर्म-बन्ध स बचने के लिए ऐसा करते हैं।

With body, mind and intellect, in fact only with the indriyas (senses), the yogis do their karma without personal attachment only for the purity of their atma.

युक्तः कर्मफलं त्यक्त्वा शान्तिमाप्नोति नैष्ठिकीम् ।
अयुक्तः कामकारेण फले सक्तो निबध्यते ॥ ५-१२॥
Yuktaḥ karmaphalaṃ tyaktvā śāntimāpnoti naiṣṭhikīm **/**
Ayuktaḥ kāmakāreṇa phale sakto nibadhyate **//** *5-12* **//**

कर्म-योगी भगवान से जुड़ा हुआ, संग छोड़कर, कर्म-फल की आशा छोड़कर, कर्म करता है और परम शांति पा लेता है, लेकिन भगवान् से न जुड़ा हुआ, फल की आशा में एक सकाम कर्म-बंधन में फंस जाता है।

The person dedicated to Brahma, having given up his personal desire for the fruit, finds settled peace without disturbance. But the non-dedicated man, because of desire, bound by the love of fruit, suffers from bondage.

सर्वकर्माणि मनसा संन्यस्यास्ते सुखं वशी ।
नवद्वारे पुरे देही नैव कुर्वन्न कारयन् ॥ ५-१३॥
Sarvakarmāṇi manasā saṃnyasyāste sukhaṃ vaśī **/**
Navadvāre pure dehī naiva kurvanna kārayan **//** *5-13* **//**

सब कर्मों को मन से त्याग कर, इंद्रियों को वश में करके, कर्मयोगी सुख से रहता है क्योंकि नवद्वार वाला शरीर धारी कर्मयोगी न कर्म करता है न कराता है, फल की आशा छोड़कर स्वतंत्र रहता है।
Having given up, i. e., surrendered, all Karmas to Brahma with the mind, the man of spiritual discipline stays at peace in the body, city of nine gates, the reason being that he neither does anything personallly nor does he cause anything to be done strictly for himself.

न कर्तृत्वं न कर्माणि लोकस्य सृजति प्रभुः ।
न कर्मफलसंयोगं स्वभावस्तु प्रवर्तते ॥ ५-१४॥
Na kartṛtvaṃ na karmāṇi lokasya sṛjati prabhuḥ **/**
Na karmaphalasaṃyogaṃ svabhāvastu pravartate **//** *5-14* **//**

ईश्वर मनुष्यों के कर्मों की, न कर्तृत्व की, सृष्टि करता है। कर्मफल के साथ जुड़ जाना केवल मनुष्य का अपना स्वभाव है, प्रकृति के कारण।
The Lord of life creates neither the human commitment to action nor the human involvement with karma, nor the fruit of karma. All commitment and all the dynamics of karma goes on because of Nature.
(That is why Lord Krishna has warned Arjuna that if he does not take up arms in the battle, he will be forced by Nature to do so.)

नादत्ते कस्यचित्पापं न चैव सुकृतं विभुः ।
अज्ञानेनावृतं ज्ञानं तेन मुह्यन्ति जन्तवः ॥ ५-१५॥
Nādatte kasyacitpāpaṃ na caiva sukṛtaṃ vibhuḥ **/**
Ajñānenāvṛtaṃ jñānaṃ tena muhyanti jantavaḥ **//** *5-15* **//**

सर्वव्यापक ईश्वर किसी मनुष्य के पाप पुण्य को ग्रहण नहीं करता, न किसी के पाप पुण्य का सर्जन करता है। किंतु ज्ञान पर परदे के कारण मनुष्य कर्म–बंधन में फंस जाता है।
The Cosmic Atma neither assigns sin to anybody, nor does It award any reward for good karma. But the awareness of people is covered by ignorance. Hence they are misled by that ignorance (to believe that they are the doers).

ज्ञानेन तु तदज्ञानं येषां नाशितमात्मनः ।
तेषामादित्यवज्ज्ञानं प्रकाशयति तत्परम् ॥ ५-१६॥

Jñānena tu tadajñānaṃ yeṣāṃ nāśitamātmanaḥ **।**
Teṣāmādityavajjñānaṃ prakāśayati tatparam **॥** *5-16* **॥**

ज्ञान से जिन आत्माओं का नष्ट हो चुका है अज्ञान, सूर्य भगवान् के प्रकाश की तरह उनके अज्ञान को हटा देता है, यदि वे भगवान् से जुड़े हैं तब।

Therefore the persons whose awareness of the atman is not covered by ignorance-- because ignorance is destroyed by knowledge-- their self-knowledge shines like the light of the sun in their case.

तद्बुद्धयस्तदात्मानस्तन्निष्ठास्तत्परायणाः ।
गच्छन्त्यपुनरावृत्तिं ज्ञाननिर्धूतकल्मषाः ॥ ५-१७॥
Tadbuddhayastadātmānastanniṣṭhāstatparāyaṇāḥ **।**
Gacchantyapunarāvṛttiṃ jñānanirdhūtakalmaṣāḥ **॥** *5-17* **॥**

जिनके बुद्धि, आत्मा, निष्ठा, ईश्वर से जुड़ी हुई है, वह ज्ञान–शुद्ध आत्मा मुक्त हो जाते हैं, फिर संसार चक्र में नहीं आते।

People of that intelligence, that purity of atma, that commitment and that dedication, with their awareness, free of all darkness with their knowledge and vision, ultimately go to the state of freedom from the transmigration cycle.

विद्याविनयसम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि ।
शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः ॥ ५-१८॥
Vidyāvinayasampanne brāhmaṇe gavi hastini **।**
Śuni caiva śvapāke ca paṇḍitāḥ samadarśinaḥ **॥** *5-18* **॥**

जो मनुष्य विद्या विनय से संपन्न हैं, शुद्ध हैं, वे ब्राह्मण, गौ, हाथी, कुत्ता और चाण्डाल सब में समदर्शी हो जाते हैं।

People of such knowledge and awareness have the same vision of life's acceptance, whatever the form of life: whether it is a learned Brahmana with humility, or a cow or an elephant or a dog or a sinner.

इहैव तैर्जितः सर्गो येषां साम्ये स्थितं मनः ।
निर्दोषं हि समं ब्रह्म तस्माद् ब्रह्मणि ते स्थिताः ॥ ५-१९॥
Ihaiva tairjitaḥ sargo yeṣāṃ sāmye sthitaṃ manaḥ **।**
Nirdoṣaṃ hi samaṃ brahma tasmād brahmaṇi te sthitāḥ **॥** *5-19* **॥**

जो मनुष्य मन और आत्मा से समदर्शी हो जाते हैं वे तो इस जीवन में ही मुक्त हो जाते हैं। ब्रह्म स्वयं निर्दोष है, समदर्शी है। जीवनमुक्त मनुष्य सदा ब्रह्म में वास करते हैं।

Here itself they have achieved everything in life whose mind is settled in the 'Samadarshi' (unconditional acceptance) state of life. They are settled in Brahma for that reason, because for them, there is nothing short, nothing self-contradicting, in the cosmic system.

न प्रहृष्येत्प्रियं प्राप्य नोद्विजेत्प्राप्य चाप्रियम् ।
स्थिरबुद्धिरसम्मूढो ब्रह्मविद् ब्रह्मणि स्थितः ॥ ५-२०॥
Na prahṛṣyetpriyaṃ prāpya nodvijetprāpya cāpriyam **/**
Sthirabuddhirasammūḍho brahmavid brahmaṇi sthitaḥ **//** *5-20* **//**

जीवनमुक्त मनुष्य न किसी प्रिय वस्तु को पाकर प्रसन्न होता न अप्रिय को पाकर दुःखी होता। वह स्थरबुद्धि होता है, विद्वान होता है, ब्रह्म ज्ञानी होता है, सदा ब्रह्म सत्ता में वास करता है।

Man should not rejoice when he gets something he loves, nor should he feel sorrow when he comes across what is not dear to him. The man of Brahma realization, settled in Brahma with undisturbed intelligence, never feels deluded by things on the surface.

बाह्यस्पर्शेष्वसक्तात्मा विन्दत्यात्मनि यत्सुखम् ।
स ब्रह्मयोगयुक्तात्मा सुखमक्षयमश्नुते ॥ ५-२१॥
Bāhyasparśeṣvasaktātmā vindatyātmani yatsukham **/**
Sa brahmayogayuktātmā sukhamakṣayamaśnute **//** *5-21* **//**

वह मनुष्य बाह्य सुख, स्पर्श वस्तुओं में कोई रुचि नहीं लेता क्योंकि उसे ब्रह्मयुक्त योग्य अक्षय सुख मिलता है जो उसे केवल ब्रह्म प्रेम में ही मिल सकता है।

The person who does not entertain external stimulants finds peace and happiness within the atma, and this person dedicated to Brahma, the Cosmic Spirit, finds that peace and happiness which does not ever diminish, but lasts for all time.

ये हि संस्पर्शजा भोगा दुःखयोनय एव ते ।
आद्यन्तवन्तः कौन्तेय न तेषु रमते बुधः ॥ ५-२२॥
Ye hi saṃsparśajā bhogā duḥkhayonaya eva te **/**
Ādyantavantaḥ kaunteya na teṣu ramate budhaḥ **//** *5-22* **//**

जो बाह्य स्पर्श से सुख मिलता ह, वह क्षणिक होता है। हे कुंती पुत्र, और बुद्धिमान पुरुष ऐसे सुखद सुखों में नहीं फंसता, आदि में ही उनका अंत हो जाता है।

All such external experiences which excite the senses, the sense of touch, for example, they end up in suffering. O son of Kunti, they just begin and end. So the man of intelligence and awareness finds no interest therein.